Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जपुजी

विनोबा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जपुजी

[मूल सहित भाष्य]

•

विनोबा

•

सर्व-सेवा प्रकाशन
राजघाट, वाराणसी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रकाशक : सर्व-सेवा प्रकाशन,
राजघाट, वाराणसी-१
संस्करण : पंचम; ३०००, नवम्बर, '७६
कुल प्रतियाँ : १२,०००
मुद्रक : शिवलाल प्रिन्टर्स
नायक बाजार, वाराणसी-१

मूल्य : दो रुपया पचास पैसा मात्र
Price Rs. 2.50

Title : JAPUJEE
Commentator : VINOBA
SARVA SEVA PRAKASHAN
RAJGHAT, VARANASI-1

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रस्तावना

हमारी कश्मीर-यात्रा के आरम्भ में कुछ दिन, जपुजी का सामूहिक अध्ययन किया जाता था। उस समय जपुजी पर जो व्याख्यान मैंने दिये थे, उनकी टिप्पणियाँ उस वक्त ली गयी थीं। उनका संग्रह करनेवाली यह पुस्तक चार साल के बाद प्रकाशित हो रही है।

यह नाम-स्मरण की किताब है। इसमें सत्यस्वरूप भगवान् की उपासना है। हम सत्य-निष्ठ कैसे बनें ? ऐसा आरम्भ में प्रश्न उपस्थित किया है और अन्त में "सत्य-खंड" में हमें पहुँचा दिया है। बीच में साधना का वर्णन किया है। साधना सर्व-समावेशक है, जिसके आठ अंग आखिर की पौड़ी में निर्दिष्ट हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुल साधना "निरभउ निरवैरु" इन दो शब्दों में बता सकते हैं। मानव के सामने आज जो समस्याएँ पेश हैं, उनका हल इन दो शब्दों में रहा है। इसके साथ मैं हमारे काम के लिए एक और शब्द जोड़ देता हूँ—"निष्पक्ष"। यह भी जपुजी में सूचित है, "मंने मगु न चलै पंथु"।

हमारी शांति-सेना के अध्ययन के लिए इसमें अच्छी सामग्री मिलेगी, इस ख्याल से यह पुस्तक अभी प्रकाशित करने की मैंने इजाजत दी है।

भूदान-यात्रा,
जिला-बलांगीर,
ओड़ीसा प्रदेश,
१८-११-'६३

विनोबा का जय जगत्

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रकाशकीय

कश्मीर की भूदान-यात्रा में २४ मई १९५९ से २३ जून १९५९ तक पू० विनोबाजी ने 'जपुजी' पर भाष्य किया। 'गीता-प्रवचन', 'धम्मपद', 'कुरान-सार' और 'नामघोषा-सार' के पश्चात्, 'जपुजी' का यह भाष्य प्रकाशित करते हुए हमें बड़ी प्रसन्नता हो रही है। आरम्भ में पाठ की सुविधा की दृष्टि से, मूल जपुजी भी दे दिया है।

'एकं सत् विप्रा बहुधा वदन्ति'—ज्ञानी लोग, भिन्न-भिन्न भाषा में जिस एक ही सत्य का दर्शन करते हैं, उसकी खोज के लिए, मजहबों को छोड़कर हमें रूहानियत की राह लेनी होगी। गुरु नानकदेव ने कहा है :

"आई पंथी सगल जमाती
मनि जीतै जगु जीतु।"

●

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सो दरु केहा सो घरु केहा
जितु बहि सरब समाले ।
बाजे नाद अनेक असंखा
केते वावणहारे ॥...

जो तिसु भावै सोई करसी
हुकमु न करणा जाई ।
सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु
नानक रहणु रजाई ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अनुक्रमणिका

अध्याय	पृष्ठ मूल	पृष्ठ भाष्य
I मंगलाचरण		
१. मंत्र	१	२५
२. जपु	१	२५
३. सत्य की खोज	१	२८
४. शरणता	२	३१
५. सो मैं विसरि न जाई	३	३५
II श्रवण-मनन-निदिध्यसन		
६. श्रवण	५	४२
७. मनन	६	४५
८. निदिध्यसन	७	४८
III भगवद्-महिमा		
९. अवर्णनीय i	११	६१
१०. अवर्णनीय ii	१३	७१
११. सो बरु	१६	८१

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अध्याय	पृष्ठ मूल	भाष्य
IV साधना		
१२. आदेश	१८	८७
१३. प्रेरणा	१९	९४
१४. धरमखंड	१९	९६
१५. ज्ञानखंड	२०	९९
१६. सरमखंड	२१	१००
१७. करमखंड	२१	१०३
१८. सचखंड	२१	१०४
१९. अन्तिम उपदेश	२२	१०८
२०. सलोकु	२२	११०

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ज पु जी

[मूल]

I मंगलाचरण

१. मंत्र

१ ओंकार सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु।
अकालमूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

२. जपु

आदि सचु जुगादि सचु।
है भी सचु नानक होसी भी सचु।

३. सत्य की खोज

१ सोचै सोचि न होवई जे सोची लख वार।
चुपै चुपि न होवई जे लाइ रहा लिवतार।
भुखिआ भुख न उतरी जे बंना पुरीआ भार।
सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि।
किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि।
हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

४. शरणता

२ हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई।
हुकमी होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई।

हुकमी उतमु नीचु हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि।
इकना हुकमी बखसीस इकि हुकमी सदा भवाईअहि।

हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ।
नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ॥

३ गावै को ताणु होवै किसै ताणु।
गावै को दाति जाणै नीसाणु।

गावै को गुण वडिआईआ चार।
गावै को विदिआ विखमु वीचारु।

गावै को साजि करे तनु खेह।
गावै को जीअ लै फिरि देह।

गावै को जापै दिसै दूरि।
गावै को वेखै हादरा हदूरि।

कथना कथी न आवै तोटि।
कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि।

देदा दे लैदे थकि पाहि।
जुगा जुगंतरि खाही खाहि।

हुकमी हुकमु चलाए राहु।
नानक विगसै बेपरवाहु॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

४ साचा साहिबु साचु नाइ भाखिआ भाउ अपारु।
आखहि मंगहि देहि देहि दाति करे दातारु।
फेरि कि अगै रखीऐ जितु दिसै दरबारु।
मुहौ कि बोलणु बोलीऐ जितु सुणि धरे पिआरु।
अंम्रित वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु।
करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु।
नानक एवै जाणीऐ सभु आपे सचिआरु॥

५. सो मै विसरि न जाई

५ थापिआ न जाइ कीता न होइ।
आपे आपि निरंजनु सोइ।
जिनि सेविआ तिनि पाइआ मानु।
नानक गावीऐ गुणी निधानु।
गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ।
दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ।
गुरमुखि नादं गुरमुखि वेद गुरमुखि रहिआ समाई।
गुरु ईसरु गुरु गोरखु बरमा गुरु पारबती माई।
जे हउ जाणा आखा नाही कहणा कथनु न जाई।
गुरा इक देहि बुझाई।
सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

६ तीरथि नावा जे तिसु भावा विणु भाणे कि नाइ करी ।
जेती सिरठि उपाई वेखा विणु करमा कि मिलै लई ।
मति विचि रतन जवाहर माणिक जे इक गुर की सिख सुणी ।
गुरा इक देहि बुझाई ।
सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ।।

७ जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होइ ।
नवा खंडा विचि जाणीऐ नालि चलै सभु कोइ ।
चंगा नाउ रखाइ कै जसु कीरति जगि लेइ ।
जे तिसु नदरि न आवई त वात न पुछै के ।
कीटा अंदरि कीटु करि दोसी दोसु धरे ।
नानक निरगुणि गुणु करे गुणवंतिआ गुणु दे ।
तेहा कोइ न सुझई जि तिसु गुणु कोइ करे ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

II श्रवण-मनन-निदिध्यसन

६. श्रवण

८ सुणिऐ सिध पीर सुरि नाथ ।
सुणिऐ धरति धवल आकास ।

सुणिऐ दीप लोअ पाताल ।
सुणिऐ पोहि न सकै कालु ।

नानक भगता सदा विगासु ।
सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥

९ सुणिऐ ईसरु बरमा इन्दु ।
सुणिऐ मुखि सालाहण मन्दु ।

सुणिऐ जोग जुगति तनि भेद ।
सुणिऐ सासत सिम्रिति वेद ।

नानक भगता सदा विगासु ।
सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥

१० सुणिऐ सतु संतोखु गिआनु ।
सुणिऐ अठसठि का इसनानु ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुणिऐ पड़ि पड़ि पावहि मानु।
सुणिऐ लागै सहजि धिआनु।
नानक भगता सदा विगासु।
सुणिऐ दूख पाप का नासु॥

११ सुणिऐ सरा गुणा के गाह।
सुणिऐ सेख पीर पातिसाह।
सुणिऐ अंधे पावहि राहु।
सुणिऐ हाथ होवै असगाहु।
नानक भगता सदा विगासु।
सुणिऐ दूख पाप का नासु॥

७. मनन

१२ मंने की गति कही न जाइ।
जे को कहै पिछै पछुताइ।
कागदि कलम न लिखणहारु।
मंने का बहि करनि वीचारु।
ऐसा नामु निरंजनु होइ।
जे को मंनि जाणै मनि कोइ॥

१३ मंनै सुरति होवै मनि बुधि।
मंनै सगल भवण की सुधि।
मंनै मुहि चोटा ना खाइ।
मंनै जम कै साथि न जाइ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऐसा नामु निरंजनु होइ।
जे को मंनि जाणै मनि कोइ॥

१४ मंनै मारगि ठाक न पाइ।
मंनै पति सिउ परगटु जाइ।
मंनै मगु न चलै पंथु।
मंनै धरम सेती सनबंधु।
ऐसा नामु निरंजनु होइ।
जे को मंनि जाणै मनि कोइ॥

१५ मंनै पावहि मोखु दुआरु।
मंनै परवारै साधारु।
मंनै तरै तारे गुरु सिख।
मंनै नानक भवहि न भिख।
ऐसा नामु निरंजनु होइ।
जे को मंनि जाणै मनि कोइ॥

८. निदिध्यसन

१६ पंच परवाण पंच परधानु।
पंचे पावहि दरगहि मानु।
पंचे सोहहि दरि राजानु।
पंचा का गुरु एकु धिआनु।
जे को कहै करै वीचारु।
करते कै करणै नाही सुमारु।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

धौलु धरमु दइआ का पूतु।
संतोखु थापि रखिआ जिनि सूति।
जे को बुझै होवै सचिआरु।
धवलै उपरि केता भारु।
धरती होरु परै होरु होरु।
तिस ते भारु तलै कवणु जोरु।
जीअ जाति रंगा के नाव।
सभना लिखिआ वुड़ी कलाम।
एहु लेखा लिखि जाणै कोइ।
लेखा लिखिआ केता होइ।
केता ताणु सुआलिहु रूपु।
केती दाति जाणै कौणु कूतु।
कीता पसाउ एको कवाउ।
तिस ते होए लख दरीआउ।
कुदरति कवण कहा वीचारु।
वारिआ न जावा एक वार।
जो तुधु भावै साई भली कार।
तू सदा सलामति निरंकार॥
१७ असंख जप असंख भाउ।
असंख पूजा असंख तप ताउ।
असंख गरंथ मुखि वेद पाठ।
असंख जोग मनि रहहि उदास।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

असंख भगत गुण गिआन वीचार।
असंख सती असंख दातार।
असंख सूर मुह भख सार।
असंख मोनि लिव लाइ तार।
कुदरति कवण कहा वीचारु।
वारिआ न जावा एक वार।
जो तुधु भावै साई भली कार।
तू सदा सलामति निरंकार॥

१८ असंख मूरख अंध घोर।
असंख चोर हरामखोर।
असंख अमर करि जाहि जोर।
असंख गलवढ हतिआ कमाहि।
असंख पापी पापु करि जाहि।
असंख कूड़िआर कूड़े फिराहि।
असंख मलेछ मलु भखि खाहि।
असंख निंदक सिरि करहि भारु।
नानकु नीचु कहै वीचारु।
वारिआ न जावा एक वार।
तो तुधु भावै साई भली कार।
तू सदा सलामति निरंकार॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१९ असंख नाव असंख थाव।
अगंम अगंम असंख लोअ।
असंख कहहि सिरि भारु होइ।
अखरी नामु अखरी सालाह।
अखरी गिआनु गीत गुण गाह।
अखरी लिखणु बोलणु बाणि।
अखरा सिरि संजोगु वखाणि।
जिनि एहि लिखे तिसु सिरि नाहि।
जिव फुरमाए तिव तिव पाहि।
जेता कीता तेता नाउ।
विणु नावै नाही को थाउ।
कुदरति कवण कहा वीचारु।
वारिआ न जावा एक वार।
जो तुधु भावै साई भली कार।
तू सदा सलामति निरंकार॥

●

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

III भगवद्-महिमा

९. अवर्णनीय I

२० भरीऐ हथु पैरु तनु देह।
पाणी धोतै उतरसु खेह।

सूत पलीती कपड़ु होइ।
दे साबूणु लईऐ ओहु धोइ।

भरीऐ मति पापा कै संगि।
ओहु धोपै नावै कै रंगि।

पुंनी पापी आखणु नाहि।
करि करि करणा लिखि लै जाहु।

आपे बीजि आपे ही खाहु।
नानक हुकमी आवहु जाहु॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

२१ तीरथु तपु दइआ दतु दानु ।
जे को पावै तिल का मानु ।

सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ ।
अंतरगति तीरथि मलि नाउ ।

सभि गुण तेरे मै नाही कोइ ।
विणु गुण कीते भगति न होइ ।

सुअसति आथि बाणी बरमाउ ।
सति सुहाणु सदा मनि चाउ ।

कवणु सु वेला वखतु कवणु, कवण थिति कवणु वारु ।
कवणि सि रुती माहु कवणु, जितु होआ आकारु ।

वेल न पाईआ पंडती, जि होवै लेखु पुराणु ।
वखतु न पाइओ कादीआ, जि लिखनि लेखु कुराणु ।

थिति वारु ना जोगी जाणै, रुति माहु ना कोई ।
जा करता सिरठी कउ साजे, आपे जाणै सोई ।

किव करि आखा किव सालाही, किउ वरनी किव जाणा ।
नानक आखणि सभु को आखै, इकदू इकु सिआणा ।

वडा साहिबु वडी नाई, कीता जा का होवै ।
नानक जे को आपौ जाणै, अगै गइआ न सोहै ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

२२ पाताला पाताल लख, आगासा आगास।
ओड़क ओड़क भालि थके, वेद कहनि इक वात।

सहस अठारह कहनि कतेबा, असुलू इकु धातु।
लेखा होइ त लिखीऐ लेखै होइ विणासु।

नानक वडा आखीऐ आपे जाणै आपु॥

२३ सालाही सालाहि, एती सुरति न पाईआ।
नदीआ अतै वाह पवहि समुंदि न जाणीअहि।

समुंद साह सुलतान गिरहा सेती मालु धनु।
कीड़ी तुलि न होवनी जे तिसु मनहु न वीसरहि॥

१०. अवर्णनीय ॥

२४ अंतु न सिफती कहणि न अंतु।
अंतु न करणै देणि न अंतु।
अंतु न वेखणि सुणणि न अंतु।
अंतु न जापै किआ मनि मंतु।
अंतु न जापै कीता आकारु।
अंतु न जापै पारावारु।
अंत कारणि केते बिललाहि।
ता के अंत न पाए जाहि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एहु अंतु न जाणै कोइ ।
बहुता कहीऐ बहुआ होइ ।

वडा साहिबु ऊचा थाउ ।
ऊचे उपरि ऊचा नाउ ।

एवडु ऊचा होवै कोइ ।
तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ ।

जेवडु आपि जाणै आपि आपि ।
नानक नदरी करमी दाति ॥

२५ बहुता करमु लिखिआ ना जाइ ।
वडा दाता तिलु न तमाइ ।

केते मंगहि जोध अपार ।
केतिआ गणत नही वीचारु ।
केते खपि तुटहि वेकार ।

केते लै लै मुकरु पाहि ।
केते मूरख खाही खाहि ।

केतिआ दूख भूख सद मार ।
एहि भि दाति तेरी दातार ।

बंदि खलासी भाणै होइ ।
होरु आखि न सकै कोइ ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जे को खाइकु आखणि पइा ।
ओहु जाणै जेतीआ मुहि खाइ ।

आपे जाणै आपे देइ ।
आखहि सि भि केई केइ ।

जिसनो बखसे सिफति सालाह ।
नानक पातिसाही पातिसाहु ॥

२६ अमुल गुण अमुल वापार ।
अमुल वापारीए अमुल भंडार ।

अमुल आवहि अमुल लै जाहि ।
अमुल भाइ अमुला समाहि ।

अमुलु धरमु अमुलु दीबाणु ।
अमुलु तुलु अमुलु परवाणु ।

अमुलु बखसीस अमुलु नीसाणु ।
अमुलु करमु अमुलु फुरमाणु ।

अमुलो अमुलु आखिआ न जाइ ।
आखि आखि रहे लिवलाइ ।

आखहि वेद पाठ पुराण ।
आखहि पड़े करहि वखिआण ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आखहि बरमे आखहि इंद।
आखहि गोपी तै गोविंद।

आखहि ईसर आखहि सिध।
आखहि केते कीते बुध।

आखहि दानव आखहि देव।
आखहि सुरि नर मुनि जन सेव।

केते आखहि आखणि पाहि।
केते कहि कहि उठि उठि जाहि।

एते कीते होरि करेहि।
ता आखि न सकहि केई केइ।

जेवडु भावै तेवडु होइ।
नानक जाणै साचा सोइ।

जे को आखै बोलु विगाड़ु।
ता लिखीऐ सिरि गावारा गावारु॥

११. सो दरु

२७ सो दरु केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले।
वाजे नाद अनेक असंखा केते वावणहारे।
केते राग परी सिउ कहीअनि केते गावणहारे।
गावहि तुहनो पउणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गावहि चितु गुपतु लिखि जाणहि लिखि लिखि धरमु वीचारे ।
गावहि ईसरु बरमा देवी सोहनि सदा सवारे ।

गावहि इंद इदासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ।
गावहि सिध समाधी अंदरि गावनि साध विचारे ।

गावनि जती सती संतोखी गावहि वीर करारे ।
गावनि पंडित पड़नि रखीसर जुगु जुगु वेदा नाले ।

गावहि मोहणीआ मनु मोहनि सुरगा मछ पइआले ।
गावनि रतन उपाए तेरे अठसठि तीरथ नाले ।

गावहि जोध महाबल सूरा गावहि खाणी चारे ।
गावहि खंड मंडल वरभंडा करि करि रखे धारे ।

सेई तुधुनो गावहि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ।
होरि केते गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ वीचारे ।

सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ।
है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ।

रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई ।
करि करि वेखै कीता आपणा जिव तिस दी वडिआई ।

जो तिसु भावै सोई करसी हुकमु न करणा जाई ।
सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

IV साधना

१२. आदेश

२८ मुंदा संतोख सरमु पतु झोली धिआन की करहि बिभूति।
खिंथा कालु कूआरी काइआ जुगति डंडा परतीति।
आई पंथो सगल जमाती मनि जीतै जगु जीतु।
आदेसु तिसै आदेसु ।
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥

२९ भुगति गिआनु दइआ भंडारणि घटि घटि वाजहि नाद।
आपि नाथु नाथी सभ जाकी रिधि सिधि अवरा साद।
संजोगु विजोगु दुइ कार चलावहि लेखे आवहि भाग।
आदेसु तिसै आदेसु ।
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥

३० एका माई जुगति विआई तिनि चेले परवाणु।
इकु संसारी इकु भंडारी इकु लाए दीबाणु।
जिव तिसु भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाणु।
ओहु वेखै ओना नदरि न आवै बहुता एहु विडाणु।
आदेसु तिसै आदेसु।
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु।

३१ आसणु लोइ लोइ भंडार ।
जो किछु पाइआ सु एका वार।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करि करि वेखै सिरजणहारु।
नानक सचे की साची कार।
आदेसु तिसै आदेसु।
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु॥

१३. प्रेरणा

३२ इकदू जीभौ लख होहि लख होवहि लख वीस।
लखु लखु गेड़ा आखीअहि एकु नामु जगदीस।
एतु राहि पति पवड़ीआ चड़ीऐ होइ इकीस।
सुणि गला आकास की कीटा आई रीस।
नानक नदरी पाईऐ कूड़ी कूड़ै ठीस॥

३३ आखणि जोरु चुपै नह जोरु।
जोरु न मंगणि देणि न जोरु।
जोरु न जीवणि मरणि नह जोरु।
जोरु न राजि मालि मनि सोरु।
जोरु न सुरती गिआनि वीचारि।
जोरु न जुगती छूटै संसारु।
जिसु हथि जोरु करि वेखै सोइ।
नानक उतमु नीचु न कोइ॥

१४. धरमखंड

३४ राती रुती थिती वार।
पवण पाणी अगनी पाताल।
तिसु विचि धरती थापि रखी धरमसाल।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तिसु विचि जीअ जुगति के रंग ।
तिनके नाम अनेक अनंत ।
करमी करमी होइ वीचारु ।
सचा आपि सचा दरबारु ।
तिथै सोहनि पंच परवाणु ।
नदरी करमि पवै नीसाणु ।
कच पकाई ओथै पाइ ।
नानक गइआ जापै जाइ ।।

३५ धरम खंड का एहो धरमु ।

१५. ज्ञानखंड

गिआन खंड का आखहु करमु ।
केते पवण पाणी वैसंतर केते कान महेस ।
केते बरमे घाड़ति घड़ीअहि रूप रंग के वेस ।
केतीआ करम भूमी मेर केते केते धू उपदेस ।
केते इंद चंद सूर केते केते मंडल देस ।
केते सिध बुध नाथ केते केते देवी वेस ।
केते देव दानव मुनि केते केते रतन समुंद ।
केतीआ खाणी केतीआ बाणी केते पात नरिंद ।
केतीआ सुरती सेवक केते नानक अंतु न अंतु ।।

३६ गिआन खंड महि गिआनु परचंडु ।
तिथै नाद बिनोद कोड अनंदु ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१६. श्रम खंड

सरम खंड की बाणी रूपु।
तिथै घाड़ति घड़ीऐ बहुतु अनूपु।

ता कीआ गला कथीआ ना जाहि।
जे को कहै पिछै पछुताइ।

तिथै घड़ीऐ सुरति मति मनि बुधि।
तिथैं घड़ीऐ सुरा सिधा की सुधि॥

१७. करम खड

३७ करम खंड की वाणी जोरु।
तिथै होरु न कोई होरु।

तिथै जोध महा बल सूर।
तिन महि रामु रहिआ भरपूर।

तिथै सीतो सीता महिमा माहि।
ताके रूप न कथने जाहि।

ना ओहि मरहि न ठागे जाहि।
जिन कै रामु वसै मन माहि।

तिथै भगत वसहि के लोअ।
करहि अनंदु सचा मनि सोइ॥

१८. सच खंड

सच खंडि वसै निरंकारु।
करि करि वेखै नदरि निहाल।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तिथै खंड मंडल वरभंड।
जे को कथै त अंत न अंत।

तिथै लोअ लोअ आकार।
जिव जिव हुकमु तिवै तिव कार।

वेखै विगसै करि वीचारु।
नानक कथना करड़ा सारु॥

१९. अन्तिम उपदेश

३८ जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु।
अहरणि मति वेदु हथीआरु।

भउ खला अगनि तपताउ।
भांडा भाउ अंम्रितु तितु ढालि।

घड़ीऐ सबदु सची टकसाल।
जिन कउ नदरि करमु तिन कार।

नानक नदरी नदरि निहाल॥

२०. सलोकु

पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु।
दिवसु राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु।
चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि।
करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि।
जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि।
नानक ते मुख उजलेकेती छुटीनालि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ज पु जी

'जपुजी' में धर्म का निचोड़ रखा गया है। गुरु नानक ने अपनी अंतिम उम्र में, सारी यात्रा खत्म करने के बाद, यह लिखा है। मुझे यह बहुत भाया है। सन् १९४० में, व्यक्तिगत सत्याग्रह में जब मैं जेल में था, तब मैंने 'जपुजी' पहली बार पढ़ा। उस समय मैं, नामदेव के मराठी भजनों का संग्रह कर रहा था। उनके कुछ हिन्दी भजन 'ग्रंथसाहिब' में भी हैं। इसीलिए मैंने 'ग्रंथसाहिब' मँगवाया, और नामदेव के लिए कुल पढ़ लिया। उस वक्त एक सिख भाई मेरे साथ थे, जो 'जपुजी' का पाठ किया करते थे। लेकिन उस वक्त मुझे उसका उतना अर्थ मालूम नहीं था, और मेरे पास अर्थ जानने के साधन भी उपलब्ध नहीं थे। इसमें कुछ ऐसे शब्द हैं, जिनका अर्थ एकदम से ध्यान में नहीं आता है। मिसाल के तौर पर '**करम खंड की बाणी जोरु**' (पौ० ३७) लीजिये। इसमें 'करम' का अर्थ है, परमेश्वर की कृपा। 'करम' अरबी शब्द है। जब इन्सान परमेश्वर की कृपा की भूमिका पर चलता है, तब उसकी वाणी का स्वरूप क्या होता है, इसका वर्णन यहाँ किया जा रहा है। इस भूमिका में उसका भगवान् से मिलन हो जाता है।

पंजाब की पदयात्रा में वहाँ की जनता से संपर्क करना था, इसलिए मैंने दुबारा 'जपुजी' का अध्ययन शुरू किया। उसका मुझ पर बहुत गहरा असर पड़ा। रात में कभी स्वप्न आये, तो उसमें भी गुरु नानक के वचन याद आते थे। चिंतन से उन वचनों का गहरा अर्थ मालूम होता है। इसका जितना चिंतन करो, उतना

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अधिक मिलता जाता है। मैं चाहता हूँ कि इसका असर हिन्दुस्तान के लोगों के चित्त पर हो।

हमारे यहाँ कुछ बड़े भाष्यवाले ग्रंथ भी लिखे गये हैं, और कुछ सूत्रवाले भी। 'जपुजी' सूत्रवाला ग्रन्थ है। अड़तीस पौड़ियाँ, आरम्भ का मूल मंत्र, और अंतिम श्लोक मिलकर, बिलकुल थोड़े में, धर्म का सारा सार रख दिया है। वह भी ऐसे ढंग से कि सिर्फ श्रद्धा की बात नहीं की गयी है, काफी व्यापक दृष्टि से सोचा गया है। ज्ञानयोग, ध्यानयोग, भक्तियोग, साधना आदि सब-कुछ कहा गया है। जैसे 'ईशावास्योपनिषद्' में, अठारह मंत्रों में, कुल वैदिक धर्म का सार आ गया है, वैसे ही इसमें दर्शन, नीतिविचार, तत्त्वज्ञान आदि सबका निचोड़ कह दिया है। 'जपुजी' 'ईशावास्योपनिषद्' जितना संक्षिप्त नहीं है। इसकी अड़तीस पौड़ियाँ यानी गीता के लगभग एक सौ साठ अनुष्टुप् छंद हैं। आकार में यह करीब एक-चौथाई गीता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जपुजी

[भाष्य]

१. मंगलाचरण

१ ओंकार सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु।
अकालमूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

जपु

आदि सचु जुगादि सचु।
है भी सचु नानक होसी भी सचु।

हर उपासना में कुछ मूल मंत्र होते हैं, जो चिंतन के लिए होते हैं। जैसे भागवत-संप्रदाय में 'द्वादश अक्षर मंत्र', राम-संप्रदाय में 'त्रयोदश अक्षर मंत्र', शिव-संप्रदाय में 'पंचाक्षर मंत्र', वैसे ही सिखों का यह मूलमंत्र है, जिसके द्रष्टा, ऋषि नानक हैं। मंत्रा के कोई कर्ता, लेखक, नहीं होते, बल्कि द्रष्टा होते हैं। ऋषियां को दर्शन होता है, अथवा इसलाम की पद्धति में बोलना हो, तो 'वही' होती है।

इसमें आरम्भ में एक आँकड़ा देते हैं, अक्षर नहीं। परमेश्वर की एकता सब धर्मों की बुनियाद है। ओंकार, एक नादात्मक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चिह्न, नादरूप ध्वनि है। इस प्रकार का शब्द हो, तो चिंतन में मदद मिलती है। ओंकार वेदसार माना जाता है। उपनिषद् और गीता उसीका उपयोग करते हैं। गुरु नानक ने उसका उच्चार करके अपनी परम्परा कायम रखी है। पुराने विचार को तोड़कर, जब कोई नया विचार आता है, तो वह फलता-फूलता नहीं। जब पुराने विचार का आधार लेकर कोई नया विचार आगे बढ़ता है, तो उसमें नयी चीज का स्वाद, और पुरानी चीज की ताकत, दोनों होते हैं। इससे उसका स्वाद और बढ़ता है। ईसामसीह ने कहा है: 'आई एम् नॉट् कम टू डिस्ट्रॉय, बट् टु फुल्फिल्।' (मैं तोड़ने नहीं, बल्कि पूर्ति करने आया हूँ।) इसलाम में भी कहा है कि 'मैं तस्दीक करने आया हूँ।' गुरु नानक ने वैसा ही किया है। इससे ताकत बनती है।

परमेश्वर के नाम अनंत हैं, लेकिन यहाँ एक चुना है, 'सत्' (सतिनामु)। विज्ञान भी सत्य की खोज करता है। यानी सत्य की खोज में विज्ञान और आत्मज्ञान एक हो जाते हैं। यहाँ पर परमेश्वर का आलंबन 'सत्' माना गया है, जो इस विज्ञान के जमाने में बहुत अच्छी चीज है। गीता ने उसे और दो विशेषण जोड़कर 'ॐ तत् सत्' मंत्र बनाया है।

'करता पुरखु'—में दो शब्द एकत्र लाकर, परमेश्वर विश्व का कर्ता है, और साथ-साथ वह चेतन है, यह कहा गया है। 'पुरखु' नहीं कहा जाता, तो प्रकृति भी कर्ता हो सकती थी। जड़ से जड़ पैदा हो सकता है, सारे विश्व के मूल में जड़ प्रकृति है, ऐसा भी कहा जा सकता है। विज्ञान भी सृष्टि का स्वरूप तय करने की कोशिश करता है। अब, सृष्टि ही चेतन है, ऐसा सिद्ध हो जाय तो दूसरी बात है। लेकिन यहाँ पर **'पुरखु'** कहकर परमेश्वर को एक स्वतंत्र कीमत दी जाती है। अगर दुनिया जड़ है, तो भी, जड़ का कर्ता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चेतन है, और दुनिया चेतन साबित हो जाय, तब तो कर्ता चेतन है ही।

'निरभउ निरवैरु' ये दो अद्भुत विशेषण ध्यान खींचने लायक हैं। अक्सर परमेश्वर के लिए ऐसे अभावात्मक (निगेटिव) विशेषण नहीं, भावात्मक (पोजिटिव) विशेषण ही इस्तेमाल किये जाते हैं। भगवान् को भय और वैर का कोई कारण ही नहीं है। परन्तु यहाँ पर ये दो अभावात्मक विशेषण, खासकर भक्तों के ध्यान के लिए दिये हैं, ताकि भगवान् के इन दो गुणों का ध्यान करके हम निर्भय-निर्वैर बनें।

'सत् श्री अकाल' सिखों का मंत्र है। अपनी 'नाम-माला' में भी हमने 'अकाल, निर्भय' लिया है। **'अकालमूरति'** यानी कालातीत, जहाँ काल की पहचान नहीं है। परमेश्वर कालातीत है। **'अजूनी'** यानी अजन्मा, जन्मरहित है, अथवा अयोनि है। और **'सैभं'** यानी स्वयंभू है। वह अपने में से ही सबको पैदा करता है, और उसका किसीसे जन्म नहीं हुआ है।

'गुर प्रसादि—' भगवान् को गुरुरूप में देखा गया है। गीता में **'अनुशासितारम्'** का जिक्र आया है। यहाँ पर कर्ता के यानी पैदा करनेवाले के रूप में और गुरु के रूप में, इस तरह भगवान् का दोहरा ध्यान है। बहुत-से लोग परमेश्वर को पिता के रूप में देखते हैं और माता के रूप में भी देखते हैं। गुरु नानक ने गुरु के रूप में वर्णन करके, याचना की है, कि उसका प्रसाद हमें मिलना चाहिए।

जैसे मुसलमानों में **'बिस्मिल्लाहिर् रहमानिर् रहीम्'**—"शुरू अल्लाह के नाम से जो रहमान और रहीम है"—कहकर, हर काम का आरम्भ किया जाता है, वैसे ही यहाँ हर काम, उसके स्मरण से आरंभ करने की बात है। कार्यारंभ में मूलमंत्र का

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उच्चारण है। यह मंत्र 'जपुजी साहिब' का हिस्सा नहीं है। हर चीज के आरभ में यह बोला जाता है। 'हम अपना हर काम शुरू करेंगे उस भगवान् की कृपा से, जो ओंकार है, सत्य जिसका नाम है, जो कर्ता है, चैतन्यरूप पुरुष है, निर्भय-निर्वैर है, कालातीत, अजन्मा, स्वयंभू है, और गुरु के रूप में भी है।'

'जपु' से शुरू होता है। **'आदि सचु जुगादि सचु।'** आदि यानी आकार का आदि और जुगादि यानी काल का आदि। स्थल, काल (स्पेस और टाइम) का वह आदि है। ये दो शब्द इसलिए इस्तेमाल किये हैं, कि गुरु नानक कहना चाहते हैं, कि परमेश्वर विश्व के आदि, और काल के भी आदि हैं। अथवा मूल-काल के आदि और हमारे युग के आदि हैं। वे आदि में या भूतकाल में भी सत्यस्वरूप थे, वर्तमान में सत्यस्वरूप हैं, और भविष्य में भी सत्यस्वरूप रहेंगे। **'है भी सचु नानक होसी भी सचु'**—वे पहले भी सच थे, आज भी सच हैं, और नानक कहते हैं, आगे भी सच रहेंगे। इस तरह इस मंत्र में भूत, वर्तमान, भविष्य, तीनों कालों का निर्देश आया है।

१

"सोचै सोचि न होवई जे सोची लखवार।
चुपै चुपि न होवई जे लाइ रहा लिवतार।
भुखिआ भुख न उतरी जे बंना पुरीआ भार।
सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि।
किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि।
हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि" ॥ १

'सोचै सोचि न होवई जे सोची लख वार'—हम लाख बार सोचते हैं, तो भी उसका चिंतन नहीं कर सकते। उसका चिंतन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऐसी चीज है, जो सोचने से परे है। तर्क-शक्ति वहाँ काम नहीं कर सकती। इसलिए हम लाख बार सोचते हैं, तो भी कुछ नहीं सोचते। **'चुपै चुपि न होवई जे लाइ रहा लिवतार।'** अगर हम चुप बैठते हैं, तो यह न समझें, कि हमारा चुप बैठना, वास्तव में मौन है। बाह्य, स्थूल ध्यान कितना भी लगा लें कुछ नहीं होगा। अन्दर से वासना चुप होगी, तभी सच्चा मौन सधेगा। **'भुखिआ भुख न उतरी जे बंना पुरीआ भार।'** चाहे दुनियाभर का सामान इकट्ठा कर लिया यानी बहुत सारा खाना इकट्ठा किया, इतने से ही भूख मिट गयी, ऐसा नहीं कह सकते। खाना पेट में जायेगा, तब ही साक्षात् खाना खाने की अनुभूति होगी। तभी भूखे की भूख मिटेगी। **'सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि।'** हम बुद्धिमान् हों, हम युक्ति, व्यावहारिक अक्ल चलायें, और चाहे वे युक्तियाँ हजार से लाख बन जायँ, तो भी उनमें से एक भी हमारे साथ आनेवाली नहीं। इसीलिए आगे की एक पंक्ति में हमारे सामने असली समस्या रख दी है—**'किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि।'** हम सच्चे कैसे बनेंगे, और झूठ का पर्दा कैसे टूटेगा, यही मुख्य समस्या है। हम सच्चे बनेंगे, तभी ध्यान का, चिंतन का उपयोग होगा।

'हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि'—भगवान् ने जो हमारे साथ लिख रखा है, उसके अनुसार, उसके हुक्म के मुताबिक, उसकी सम्मति पर, उसके आदेश पर चलना, नानक कहते हैं, यही सच्चा बनने का रास्ता है। इस तरह इस पौड़ी में समस्या भी पेश की है, और थोड़े में उसका उत्तर भी दे दिया है। हम अपना अहंकार, वासनाएँ, छोड़ेंगे, तभी सच्चे बनेंगे, और तभी असत्य का पर्दा टूट सकेगा। संस्कृत ग्रंथों में भी ऐसा होता है, कि अपना विषय प्रथम थोड़े में रख देते हैं, और फिर उसका विस्तार करते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उसका हुक्म कैसे माना जाय, कैसे समझा जाय ? उसके लिए बुद्धि शुद्ध करनी होगी, वासनाएँ खत्म करनी होंगी। अगर हम वासना में फँस जायँ, और यह मानें, कि यह तो भगवान् ने कराया है, तो समझना चाहिए कि असत्य का पर्दा खड़ा है। इसलिए यहाँ जो उत्तर दिया है कि उसके आदेश के अनुसार चलना चाहिए— यह आसान उत्तर नहीं है।

····भूदान का काम आरम्भ हुआ, तब मेरे पास कुछ काम नहीं था, ऐसा नहीं है। उस वक्त मेरे हाथ खाली नहीं थे। मेरे पास अनेक काम थे। लेकिन जब भूदान के काम का इशारा मिला, तब ऐसा लगा, कि यह उसका हुक्म है। तब से आज तक मैं उस पर सोचता हूँ, तो यही पाता हूँ, कि मै उस निर्णय पर स्थिर हो रहा हूँ। मैंने आश्रम छोड़ा, अनेकों की संगति छोड़ी, इधर-उधर जाना छोड़ा, दूसरी किसी चीज पर मैं ध्यान नहीं दे रहा हूँ। लेकिन यह जो कुछ हुआ, वह सारा ठीक ही हुआ, ऐसा लगता है। मन में असंतोष बिलकुल नहीं है।····

उसके आदेश को सुनने में, मनुष्य का अहंकार और आसक्ति बाधा डालती है। मुख्य चीज है, सत्य का दर्शन। अपने को कायम रखकर, सत्य का दर्शन नहीं होता है। अपने को मिटा दें, हटा दें, दूर करें, तो चिंतन की प्रक्रिया ठीक चलेगी, और सहज ही स्वच्छ प्रकाश मिलेगा। फिर उस पर चलना आसान होगा।

लेकिन उसके आदेश पर चलना आसान बात नहीं है। वह ब्रह्म-विद्या का विषय है।····मैं जब इन लोगों की योजनाएँ देखता हूँ, तो मुझे वे सब बड़ी शुष्क मालूम होती हैं। मनुष्य को कुछ-न-कुछ काम करना ही पड़ता है। उसके बिना जीवन नहीं चलता। काम किये बगैर न खाना मिलता है, न खाया हुआ ज्म हो सकता है, न नींद आ सकती है। इसलिए मनुष्य कुछ-न-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुछ करता ही रहता है। परन्तु उसमें साधना की दृष्टि नहीं होती। यह दृष्टि हममें आनी चाहिए, इसके लिए मेरे मन में बहुत उत्कंठा है।

२

"हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई।
हुकमी होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई।
हुकमी उतमु नीचु हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि।
इकना हुकमी बखसीस इकि हुकमी सदा भवाईअहि।
हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ।
नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ" ॥ २

दूसरी पौड़ी में परमेश्वर के हुक्म की बात कही गयी है। इस दुनिया में परमेश्वर का ही हुक्म चलता है। यह सब साकार सृष्टि उसीके हुक्म से हुई है। उसके हुक्म का वर्णन नहीं किया जा सकता। जीवों का निर्माण, महत्त्व की प्राप्ति, उत्तम और नीच बनना या माना जाना, सुख-दुःख-भोग, संसार में सदा भटकते रहना और बखशीश यानी मुक्ति पाना, सब उसके हुक्म से होता है। सब कुछ उसके हुक्म के अन्दर है। बाहर कोई नहीं हो सकता। सारांश, सृष्टि-कार्य, सामाजिक कार्य, व्यक्तिगत साधना, आदि जो कुछ चल रहा है, सब भगवत्-प्रेरित है। नानक कहते हैं, जिसने परमेश्वर का यह हुक्म पहचाना, वह 'मैं-मेरा, तू-तेरा' नहीं कहता। जिसने हुक्म पहचाना, वह समझता है, कि हम सब परमेश्वर के हाथ की कठपुतलियाँ हैं। इसलिए उसी पर सब सौंपना चाहिए, अपने अहंकार से कुछ नहीं करना चाहिए। यह एक आध्यात्मिक बात है। दूसरी बात है कि परमेश्वर के हुक्म के अनुसार, यानी कुदरत के कानून के अनुसार बरतना चाहिए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विज्ञान के जमाने में हमें समझना चाहिए, कि प्रकृति के नियम के अनुसार सब कुछ चलेगा, हमारे हुक्म से नहीं चलेगा। अग्नि में हाथ डालो और फिर भी हाथ न जले, यह नहीं होगा। इस तरह एक बाजू अंतर्यामी भगवान् पर सब-कुछ सौंपने की बात है, और दूसरी बाजू कुदरत के कानून के मुताबिक अपना जीवन बिताने की बात है। 'मैं हूँ' यह बात, दोनों बाजू से कह नहीं सकते।

इसलाम ने यही कहा है। इसलाम का मतलब है, सब-कुछ भगवान् को समर्पण करना। यही चीज ईसामसीह ने कही थी: 'लैट दाइ विल् बी डन्, नॉट माइन्।' भगवान् ने गीता में यही कहा है: **'सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।'**

३

"गावै को ताणु होवै किसै ताणु।
गावै को दाति जाणै नीसाणु।
गावै को गुण वडिआईआ चार।
गावै को विदिआ विखमु वीचारु।
गावै को साजि करे तनु खेह।
गावै को जीअ लै फिरि देह।
गावै को जापै दिसै दूरि।
गावै को वेखै हादरा हदूरि।
कथना कथी न आवै तोटि।
कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि।
देदा दे लैदे थकि पाहि।
जुगा जुगंतरि खाही खाहि।
हुकमी हुकमु चलाए राहु।
नानक विगसै वेपरवाहु" ॥ ३

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मुख्तलिफ लोग अपने-अपने अनुभवों के अनुसार, परमेश्वर का वर्णन मुख्तलिफ तरीके से करते हैं। कोई उसकी ताकतों का वर्णन करते हैं, जिन्होंने ताकत पायी है। कोई उसकी उदारता का, और चिह्न जानकर यानी चिह्न के तौर पर उसकी नियामतों का, तो कोई उसके गुणों का वर्णन करते हैं। कोई उसकी सुन्दर महिमाएँ गाते हैं। कोई कहते हैं कि उसमें कितना, विचार के लिए मुश्किल, अतर्क्य, गहन, ज्ञान भरा है। कोई कहते हैं कि वही पिण्ड-ब्रह्माण्ड को सजाता है, वही संहार करता है, और वही जीवों को जन्म-मृत्यु की प्रेरणा देता है। कोई कहते हैं कि परमेश्वर बहुत दूर है। कोई देखते हैं, कि वह नजदीक है, सामने हाजिर है। किसी भी प्रकार से कहते चले जाओ, तो भी उसका कोई अंत नहीं आता। **'कोटी कोटि कोटि'** कह-कहकर भी उसका कोई नतीजा नहीं निकलता—**'कथना कथी न आवै तोटि।'** देनेवाला दे ही रहा है, लेकिन लेनेवाले थक रहे हैं—**'देदा दे लैदे थकि पाहि।'** अनेक युग से लोग खाते ही चले जा रहे हैं और वह देता ही चला जाता है। **'हुकमी हुकमु चलाए राहु। नानक विगसै बेपरवाहु।'**—हुक्म करनेवाले परमेश्वर ने एक राह ही बनायी है। जो उसके हुक्म पर चलेंगे, उसकी आज्ञा के मुताबिक उसकी राह पर चलेंगे, उनका सब ठीक चलेगा, दूसरों का नहीं। नानक कहते हैं कि वह (परमेश्वर), स्वयं-विकसित और बेपरवाह है, आनंद में है; क्योंकि उसने कानून बनाये हैं। उसने हुक्मरूपी राह खोल दी है, और खुद अत्यन्त बेपरवाह बन गया है।

इसमें भगवान् के लिए 'बेपरवाह' विशेषण आया है। वह उपनिषदों में एक दफा आया है : **'अवाकी अनादरः।'** 'अवाकी' यानी जो बोलता नहीं और 'अनादरः' यानी जिसे किसीके लिए आदर नहीं, जो किसीकी परवाह नहीं करता। कुरान में ऐसा वर्णन बहुत दफा आया है। वह 'गनी' है, यानी जिसे किसीकी

३

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

परवाह नहीं। यहाँ गुरु नानक पर शायद कुरान का भी प्रभाव होगा या उपनिषद् का भी। किसका प्रभाव है, यह कहने की जरूरत नहीं। यह विचार स्वतन्त्र भी हो सकता है। परन्तु 'हुक्म' शब्द से कुरान का अध्ययन दिखाई देता है। गुरु नानक ने दोनों का अध्ययन किया था। और वे चर्चाएँ आदि भी काफी करते थे। हालाँकि जो अनुभव की राह लेते हैं, उन्हें चर्चा की भी जरूरत नहीं होती। वैसे हिन्दुस्तान में अनुभव के साथ-साथ, संतों की प्रेरणा से कुछ शब्द चले आये हैं, जिनके आधार से मनुष्य अनुभव में पैठ सकता है। 'जपुजी' में संस्कृत और अरबी शब्द काफी हैं। उस पर से पुराने साहित्य का परिणाम स्पष्ट ही है। लेकिन नानक ने अपने भी अनुभव बताये हैं।—'परमेश्वर बेपरवाह होकर रहता है, मानो दुनिया है ही नहीं, उस पर कोई भार नहीं। उसने हुक्म बनाया है, उसकी राह पर चलो।'

४

"साचा साहिबु साचु नाइ भाखिआ भाउ अपारु।
आखहि मंगहि देहि देहि दाति करे दातारु।
फेरि कि अगै रखीऐ जितु दिसै दरबारु।
मुहौ कि बोलणु बोलीऐ जितु सुणि धरे पिआरु।
अंम्रित वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु।
करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु।
नानक एवै जाणीऐ सभु आपे सचिआरु" ॥ ४

साहिब सच्चा है, उसका नाम सच्चा है, और अपार प्रेम ही उसकी भाषा है। परमेश्वर के पास पहुँचने की भाषा है—अपार प्रेम। अथवा परमेश्वर की भाषा है उसका अपार प्रेम, जो वह सब पर समान रूप से करता है। उसकी दूसरी भाषा नहीं है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लोग उसीका वर्णन करते हैं, और 'दे दे' करके उसीसे माँगते हैं। और वह दातार देता ही चला जाता है। जब मेरे सामने वह दरबार उपस्थित होगा, या मैं उस दरबार में उपस्थित हो जाऊँगा, तब मैं उसके आगे क्या भेट रखूँगा? क्योंकि वही सब दे रहा है। मुँह से हम कौन-सी वाणी, कौन-से शब्द बोलें, जिन्हें सुनकर वह प्यार करे? वह तो सतत प्यार करता ही रहता है। फिर भी हमें अपनी भलाई के लिए, अमृतवेला में, बड़ी फजर, भगवान् का 'सच' नाम लेना चाहिए, और उसकी बड़ाई पर विचार करना चाहिए और उस नाम की अर्थ-महिमा पर भी चिंतन करना चाहिए। जैसा कि पतंजलि के सूत्र में निर्देश है— **'तज्जपस् तदर्थभावनम्'**—यानी उसका नाम जपो और उसके अर्थ का भावन करो। सोचने पर मालूम होता है, कि जैसा हम कर्म करते हैं, वैसा कपड़ा यानी देह मिलेगा। 'नदर' यानी नजर। यह अरबी शब्द है। जब उसकी नजर हम पर पड़ेगी, यानी उसकी कृपा-दृष्टि होगी, तब मोक्ष मिलेगा। इस पंक्ति का दूसरा अर्थ इस प्रकार है—'करमी' यानी उसकी उदारता से, कृपा से ही, चोला मिलेगा। 'करम' यानी उदारता। यह भी अरबी शब्द है। उसने हमें प्याररूपी चोला पहनाया है, और उसकी नजर से मोक्ष-द्वार खुल जाता है। यानी दोनों उसकी कृपा से होते हैं। नानक कहते हैं, सबका इतना सार हम जान लें तो बस है, कि वह सत्यस्वरूप है, और सब स्वयं ही बना है। उसके सिवा और कोई हस्ती ही नहीं है, वही एक हस्ती है।

५

"थापिआ न जाइ कीता न होइ।
आपे आपि निरंजनु सोइ।
जिनि सेविआ तिनि पाइआ मानु।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नानक गावीऐ गुणी निधानु।
गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ।
दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ।

गुरमुखि नादं गुरमुखि वेदं गुरमुखि रहिआ समाई।
गुरु ईसरु गुरु गोरखु बरमा गुरु पारबती माई।
जे हउ जाणा आखा नाही कहणा कथनु न जाई।
गुरा इक देहि बुझाई।
सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई" ॥ ५

वैदिक मंत्रों से भगवान् की स्थापना की जाती है, प्राणप्रतिष्ठा की जातो है। लेकिन क्या वह स्थापित किया जाता है? कारीगर पत्थर से मूर्ति बनाता है। परन्तु क्या उसे बनाया जा सकता है? किसीसे वह न स्थापित किया जाता है, न बनाया जाता है। वह अपने-आप है ही। **'स्वयंभूः परिभूः'** आदि के रूप में उसका वर्णन उपनिषद् में आता है। 'निरंजन' यानी निष्कलंक, स्वच्छ। ध्यानयोगियों ने 'निरंजन' शब्द चलाया है। परमेश्वर के लिए वह शब्द, हिन्दुस्तान की कुल भाषाओं में चलता है। परमेश्वर खुद-ब-खुद निरंजन है। दुनिया में वही है, ओर कोई नहीं। उसकी स्थापना करनेवाला कौन है? जिन्होंने उसका सेवन किया (जिनि सेविआ), या सेवा की, दोनों अर्थ हो सकते हैं, जो सगुण रूप और निर्गुण रूप को बताते हैं। उन्होंने उसका मान पाया, या प्रमाण पाया। 'मान' यानी भान। उन्हें पहचान हुई। दूसरा अर्थ यह होगा कि 'मान' यानी इज्जत। जिन्होंने उसकी सेवा की, उन्होंने इज्जत पायी। संस्कृत में 'मानम्' और 'मानः' दोनों हैं। ....**'न हि वचनस्य अतिभारो नाम कश्चित्'**—शंकराचार्य ने कहा है, कि वचन को अर्थ का भार, बोझ, नहीं होता।....नानक कहते हैं, हमें इतना ही करना चाहिए कि जो गुणनिधान है, उसका हम

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गायन करें। उस गायन को विकसित करें। उसीको सुनें, और मन में उसीके लिए प्रेम रखें। तो दुःख का परिहार होगा और हम सुख के घर में पहुँच सकते हैं। जहाँ आनंद ही आनंद है, ऐसे घर में वही हमको ले जायगा। हमें सिर्फ उसका गायन करना है।

'गुरमुखि नादं गुरमुखि वेदं' इस पद्य में ऐसा जादू है कि बिलकुल समाधि लग सके। ध्यान से परमेश्वर की जो ध्वनि सुनायी देती है, जो ध्यान का परिणाम है, उसे 'नाद' कहते हैं। और ज्ञान का परिणाम वेद है। एक, चिंतन से ध्यान होता है—समाधि की अवस्था में ध्यान होता है—और दूसरा, सृष्टि का निरीक्षण-परीक्षण करके ज्ञान प्राप्त होता है। ज्ञान-प्राप्ति की प्रक्रिया है वेद, और अन्तर में लीन होने की प्रक्रिया है ध्यान। कोई तजुरबेकार, पहचाननेवाला हो, तो वही हमें ध्यान में प्रविष्ट करा सकता है। अपने से ही ध्यान करना कठिन है। वह गुरुमुख में ही समाया है, अथवा गुरुमुख से ही मालूम होता है। गुरु ही ईश्वर है। यहाँ ईश्वर का मतलब है, शंकर। **'गोरख'** यानी गाय का रक्षण करनेवाला विष्णु। और **'बरमा'** यानी ब्रह्मदेव। **'गुरुर्-ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।'** **'पारबती माई'** यानी शक्तिमाता, गुरु ही है। 'माई' यानी लक्ष्मी भी हो सकती है। इसमें मुख्यतया गुरु की महिमा है।

'जे हउ जाणा आखा नाही--' 'परमेश्वर की स्थिति ऐसी है कि मैं उसे नहीं जानूँगा, तो वर्णन नहीं कर सकूँगा; क्योंकि जानता ही नहीं, तो वर्णन क्या करूँ? परन्तु जानता हूँ, तो भी वर्णन नहीं कर सकता। उसका कथन वाणी में नहीं आ सकता। **'जे'** यानी अगर। अगर मैं जानता तो कह नहीं सकता। वाणी वहाँ खत्म हो जाती है।····**'मूकं करोति वाचालं पंगुं लंघयते गिरिम्।'** बचपन में बड़ौदा में एक कीर्तनकार से मैंने इसका भाष्य सुना था, जो मुझे अभी भी याद है। उन्होंने कहा था कि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"संस्कृत की यह खूबी है कि इस पद्य के दो अर्थ निकलते हैं। (१) परमेश्वर मूक को वाचाल करता है, और (२) वाचाल को मूक बनाता है। 'वाचालं करोति मूकम्।' जो खूब बोलनेवाला है, वह परमेश्वर की कृपा से बोल नहीं सकता, उसकी वाणी खत्म हो जाती है।"....अगर मैं उसे जानता, तो व्याख्यान नहीं कर सकता।

गुरु ने मुझे एक बात समझा दी है कि, "सब जीवों को जो एक ही देनेवाला है", उसे मैं कभी न भूलूँ। यहाँ परमेश्वर को कर्ता के स्वरूप में नहीं, दाता के स्वरूप में लिया है। वैसे वह तो कर्ता है, दाता भी है, गुरु भी है। इस पद्य के दो अर्थ हो सकते हैं : (१) सब जीवों का जो एक ही दाता है, उसे मैं कभी न भूलूँ, और (२) सब जीवों को देनेवाला जो एक ही दाता है, सो मैं हूँ, **'सोऽहम्'**, इस बात को मैं कभी न भूलूँ।

६

"तीरथि नावा जे तिसु भावा विणु भाणे कि नाइ करी।
जेती सिरठि उपाई वेखा विणु करमा कि मिलै लई।
मति विचि रतन जवाहर माणिक जे इक गुर की सिख सुणी।
गुरा इक देहि बुझाई।
सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई" ॥ ६

मैं तीरथ में नहाने के लिए तैयार हूँ, अगर भगवान् को भाये। लेकिन उसे न भाये, तो नहाने से क्या फायदा? जितनी सृष्टि पैदा हुई, मैंने देख ली। मुझे अनुभव हुआ कि उसकी उदारता, कृपा, के बिना कुछ भी नहीं होगा। 'करमा' के दो अर्थ हो सकते हैं, उदारता और कर्म। उदारता ईश्वर की और कर्म यानी प्रयत्न भक्त का। पहला अरबी शब्द है, दूसरा संस्कृत।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अगर गुरु की एक शिक्षा हम सुनेंगे, तो हमारी मति में ही रत्न, जवाहर, माणिक मिलंगे, बाहर ढूँढने नहीं पड़ेंगे। गुरु अर्जुन ने कहा है : **'सत संतोख विचारु।'** रतन, जवाहर, माणिक यानी 'सत, संतोख, विचारु' हो सकता है। गुरु की शिक्षा सुनने से बुद्धि में प्रतिभा जाग्रत होती है। सामान्य बुद्धि अलग है, प्रतिभा अलग। बुद्धि तर्क से विकसित होती है। प्रतिभा तर्क से परे है।

७

"जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होइ।
नवा खंडा विचि जाणीऐ नालि चलै सभु कोइ।
चंगा नाउ रखाइ कै जसु कीरति जगि लेइ।
जे तिसु नदरि न आवई त वात न पुछै के।
कीटा अंदरि कीटु करि दोसी दोसु धरे।
नानक निरगुणि गुणु करे गुणवंतिआ गुणु दे।
तेहा कोइ न सुझई जि तिसु गुणु कोइ करे" ॥ ७

'आरजा' यानी आयु। अगर हमें चार युग की आयु मिले, और वह भी दसगुनी हो जाय, नव खंडों में हम मशहूर हो जायँ, नव द्वीप में हमारी कीर्ति फैल जाय, सब लोग हमारे साथ हो जायँ, सब लोग हमारी बात मानें, हमारा अच्छा नाम हो, दुनिया में हमें यश-कीर्ति प्राप्त हो, तो भी उसकी कृपा, नजर, में यह चीज नहीं आयी, भगवान् की कृपा हासिल नहीं हुई, तो कोई उसकी बात नहीं पूछेगा। ईश्वर की निगाह में वह कीट से भी कीट यानी हीन से भी हीन माना जायगा। दोषी भी उसको दोष देंगे। जो दुनिया में मशहूर हुआ, महत्त्वाकांक्षी है, सब लोग उसके पीछे हैं, तो भी उसे ईश्वर की कृपा-दृष्टि हासिल नहीं हुई, तो उसे कीट और दोषी माना जायगा। नानक कहते हैं कि भगवान्

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ही हैं, जो गुणहीन को गुणवान् बनाते हैं और, गुणवान् को 'और गुणवान्' बनाते हैं। ऐसा कोई शख्स दीखता नहीं, जो वह गुण-दान का काम कर सके।

यहाँ पर सात पौड़ियाँ खत्म हुईं। मूलमंत्र और सात पौड़ियाँ मिलकर जपुजी का एक हिस्सा बनता है। वैसे उसके हिस्से बने हुए नहीं हैं, मैंने अपने चिंतन के लिए बनाये हैं।

इस हिस्से में **प्रथम** 'एक ओंकार सत नाम' की बात है, फिर सत्य ही युगादि, सत्य ही अनादि है, यह कहा। फिर एक सवाल पेश किया, जो आध्यात्मिक जीवन के सामने आता है, कि हम सत्यनिष्ठ कैसे हो सकेंगे और मिथ्या का पर्दा कैसे टूटेगा ? उसका उत्तर दिया है कि 'हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि।' **दूसरी** पौड़ी में कहा है कि यह पहचानने की बात है, कि दुनिया में हम नाहक अहंकार और आसक्ति में पड़ते हैं। लेकिन मन से अलग होकर सोचें, तो मालूम होता है कि दुनिया में जितना होता है, उसके हुक्म से ही होता है। इसलिए हम अहंकार छोड़ें। जो इसको पहचानते हैं, उनमें अहंकार नहीं होता। **तीसरी** पौड़ी में परमेश्वर की, अनंत शक्तियों का गुणवर्णन, उसकी महिमा का वर्णन है। और आखिर सबका सार बताया है कि 'हुकमी हुकमु चलाए राहु, नानक विगसै बेपरवाहु।' यही सही राह है। हम अपने लिए दूसरी-तीसरी राहें नाहक बना लेते हैं। उसके बजाय, हम हरिशरण हो जायँ, तो ठीक होगा। परमेश्वर ने हुक्म, यानी कानून बनाया है। और वह बेपरवाह बनकर हँसता है। **चौथी** पौड़ी में नाम की तरफ ध्यान खींचा है, जो 'जपुजी' का मुख्य विषय है। साहिब सत्य है, उसका नाम सत्य है। प्रातःकाल की मंगल-वेला में हम उसका सत्य नाम गाते रहें, और समझें, कि वही एक सत्यस्वरूप है। **पाँचवीं** पौड़ी साररूप पौड़ी है, जिसमें परमेश्वर के स्वयंभू होने का विचार है। हम उसका गायन करें, ध्यान करें,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उस पर प्यार करें। फिर गुरु-महिमा बतायी है, और गुरु से प्रार्थना की है, कि वही परमेश्वर सब्र जगह है, इसका हमें भान हो। छठी पौड़ी में कहा है कि गुरु-शरणता ही मुख्य है। तीरथ आदि दूसरे-तीसरे साधनों का हम उपयोग कर सकते हैं, अगर उनकी चित्त-शुद्धि में मदद हो तो। मुख्य बात यह है कि हम गुरुशरण हों। तो फिर अपनी मति में रतन, जवाहर, माणिक होंगे, बुद्धि की प्रतिभा खुलेगी। **सातवीं** पौड़ी में कहा है कि हम दुनिया में मशहूर हो जायँ, हमारी प्रतिष्ठा बढ़े, लोग हमारे पीछे आयें, तो भी ईश्वर की निगाह में हम, कीट से भी कीट माने जायेंगे, अगर हमें भगवान् का स्मरण न हो, और हम पर भगवान् की कृपा न हो।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

२. श्रवण-मनन-निदिध्यसन

अब बारह पौड़ियों का दूसरा हिस्सा आता है, जिसमें चार-चार पौड़ियों के तीन परिच्छेद हैं। पहले हिस्से की ७ और ये १२ मिलाकर १९ पौड़ियों में जपुजी का पूर्वार्ध खत्म होता है।

तीन परिच्छेदों में से पहला श्रवण-महिमा का है।

८

"सुणिऐ सिध पीर सुरिनाथ।
सुणिऐ धरति धवल आकास।
सुणिऐ दीप लोअ पाताल।
सुणिऐ पोहि न सकै कालु।
नानक भगता सदा विगासु।
सुणिऐ दूख पाप का नासु" ॥ ८

भगवान् का नाम श्रवण करने से, भगवान् की महिमा श्रवण करने से, क्या होता है, यह इसमें बताया है। 'सुणिऐ' यानी सुनने से। ईश्वर का नाम, उसकी महिमा सुनने से, दुनिया में सिद्ध-पीर-सुर-नाथ आदि हो गये। भगवान् का नाम सुनने से यानी उसकी शब्द-शक्ति से प्रेरित होकर धरती, निर्मल आकाश, नक्षत्रलोक, और पाताल आदि विभाग बने। सुनने से कालस्वरूप की पहचान होती है, इसलिए काल की बाधा नहीं होती। परमेश्वर का नाम नाम ही 'अकाल' है। पौड़ी के अंत में ध्रुपद आया है। नानक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कहते हैं कि भक्तों को हमेशा आनन्द-ही-आनन्द मिलता है। भक्त हमेशा विकसित, प्रफुल्ल, होते हैं। भगवान् का नाम सुनने से उनके दुःखों का और पापों का नाश होता है। दुःख अकसर पाप-मूलक होते हैं। इसलिए पापनाश को ही मुख्य आवश्यकता है।

९

"सुणिऐ ईसरु बरमा इंदु।
सुणिऐ मुखि सालाहण मंदु।
सुणिऐ जोग जुगति तनि भेद।
सुणिऐ सासत सिम्रिति वेद।
नानक भगता सदा विगासु।
सुणिऐ दूख पाप का नासु" ॥९

शंकर, ब्रह्मदेव, इंद्र आदि सब स्थानी (विशिष्ट स्थान के अधिकारी), हैं। ये सब भगवन्नाम-श्रवण से ही वैसे बने हैं। ईश्वर के विविध संकल्प होते हैं, उनमें से एक-एक संकल्प जिन्होंने उठाया, वे 'स्थानी' माने जाते हैं। शंकर ईश्वर का एक संकल्प है, ब्रह्मदेव दूसरा संकल्प, इद्र तीसरा संकल्प। मंद मनुष्य भी श्रवण से लोक प्रशंसापात्र बनता है, अथवा मंदवाक् भी श्रवण से भगवत् स्तोत्र गाने में मुखर बनता है। श्रवण से योग की युक्ति मालूम होती है। और **तनि भेद** यानी स्थूल, सूक्ष्म, सूक्ष्मतर शरीर, इसका भी अनुभव होता है। **'सासत'** यानी शास्त्र, **'सिम्रिति'** यानी स्मृति और वेद का निचोड़, नाम-श्रवण में आता है।

१०

"सुणिऐ सतु संतोखु गिआनु।
सुणिऐ अठसठि का इसनानु।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुणिऐ पड़ि पड़ि पावहि मानु ।
सुणिऐ लागै सहजि धिआनु ।
नानक भगता सदा विगासु ।
सुणिऐ दूख पाप का नासु" ॥ १०

'सत संतोख विचारु' ये तीन बड़े रत्न माने गये हैं। सारे 'ग्रंथ-साहिब' का सार, ये तीन रत्न हैं। यहाँ पर 'विचार' के बदले 'ज्ञान' रखा है। 'अठसठि' यानी अड़सठ (६८)। भारत में ६८ तीर्थ माने जाते हैं। सब अड़सठ तीर्थों का स्नान नाम-स्मरण में होता है। हम खूब पढ़ते हैं, चिंतन करते हैं, ग्रंथों का सूक्ष्म अध्ययन करते हैं, उससे जो मान या स्थान पाते हैं, वह श्रवण से प्राप्त होता है। श्रवण से साधक का सहज ध्यान लगता है।

११

"सुणिऐ सरा गुणा के गाह ।
सुणिऐ सेख पीर पातिसाह ।
सुणिऐ अंधे पावहि राहु ।
सुणिऐ हाथ होवै असगाहु ।
नानक भगता सदा विगासु ।
सुणिऐ दूख पाप का नासु" ॥ ११

नामश्रवण से मनुष्य गुण-सरोवर की थाह पा लेता है। उसी श्रवण से आध्यात्मिक क्षेत्र के श्रेष्ठ और गुरु और बादशाह बनते हैं। सुनने से अंधा भी राह पायेगा, और संसार-समुद्र भी छोटा बन जायगा, हस्तगत होगा।

इन चार पौड़ियों में श्रवण-महिमा बतायी है। भक्तिमार्ग में, नवविधा भक्ति में, श्रवण का नाम प्रथम लिया है, और वह ठीक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भी है। लेकिन यहाँ पर नानक का जो विचार दीखता है, वह **'श्रवणं कीर्तनं'** के बजाय **'श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः'**— इस उपनिषद् के वचन के अनुसार दीखता है। यहाँ पर श्रवण-महिमा बतायी है, और उसके बाद की चार पौड़ियों में मनन-महिमा।

१२

"मंने की गति कही न जाइ।
जे को कहै पिछै पछुताइ।
कागदि कलम न लिखणहारु।
मंने का बहि करनि वीचारु।
ऐसा नामु निरंजनु होइ।
जे को मंनि जाणै मनि कोइ" ॥ १२

'मंने की गति' यानी मनन करनेवाले की गति। मनन करनेवाला पुरुष कितना ऊँचा चढ़ेगा, इसका कोई नाप नहीं। जो परमेश्वर के नाम का चिन्तन-मनन करनेवाले की योग्यता का कभी वर्णन करेगा, वह पीछे पछतायेगा। यानी आज जितना वर्णन किया है, उससे ज्यादा वर्णन करने की जरूरत कल महसूस होगी। यानी मनन करनेवाले की उत्तरोत्तर प्रगति होती जायगी। इसलिए उसकी सीमा नहीं है। मनन की हद आ गयी, ऐसा नहीं कहा जा सकता। एकाग्र मनन का स्वरूप अंकित करने के लिए अगर कोई (चर्चामंडल) बैठेगा तो कागज, कलम, और लिखनेवाला, पूरा नहीं पड़ेगा। भगवान् का ऐसा 'निरंजन' नाम है, कि विरला ही कोई वह नाम जानेगा, जिसके मन को मनन करने की कला हासिल हो। मनन करनेवाले की यह सबसे बड़ी महिमा है, कि वह भगवान् के नाम को जानेगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१३

"मंनै सुरति होवै मनि बुधि।
मंनै सगल भवण की सुधि।
मंनै मुहि चोटा ना खाइ।
मंनै जम कै साथि न जाइ।
ऐसा नामु निरंजनु होइ।
जे को मंनि जाणै मनि कोइ" ॥ १३

मनन करने से 'सुरत' होती है यानी तन्मयता होती है, और फिर मन में बोध होता है। 'भवण' शब्द का अर्थ 'घर' होता है, लेकिन वह शब्द कुल विश्व के लिए भी लागू होता है। मनन से सारे विश्व की खबर मिलती है। जो भगवान् का मनन करता है, उसे भगवान् की विश्व में फैली हुई जो विभूतियाँ हैं, उनका ज्ञान होता है। फिर विश्व के अलग मनन की जरूरत नहीं रहती। उसके लिए विश्व का राज खुल जाता है। मनन करने से मुँह पर थप्पड़ (चांटा) नहीं खाना पड़ता। मनन करनेवाले की हालत इस दुनिया में नीच, गिरी हुई, नहीं रहेगी, और परलोक में वह यम के साथ नहीं जायगा। भगवान् का ऐसा निरंजन नाम है, कि जो कोई मन में उसका मनन करेगा, वही उसे जानेगा।

१४

"मंनै मारगि ठाक न पाइ।
मंनै पति सिउ परगटु जाइ।
मंनै मगु न चलै पंथु।
मंनै धरम सेती सनबंधु।
ऐसा नामु निरंजनु होइ।
जे को मंनि जाणै मनि कोइ" ॥ १४

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मनन करने से मार्ग में कभी रुकावट (ठाक) नहीं आती। मनन करने से वह प्रतिष्ठा के साथ विश्व में प्रकट होगा। और प्रकट नहीं होगा, तो प्रतिष्ठा के साथ ही प्रकट नहीं होगा। वह प्रतिष्ठा के साथ ही रहता है। अथवा 'परगटु जाइ' यानी भगवान् की उपस्थिति में पहुँचता है। मनन करने से मनुष्य पंथों के रास्ते पर नहीं चलेगा। वह स्वयं धर्मतत्त्व समझ लेगा; क्योंकि मनन करने से धर्म के साथ सीधा सम्बन्ध जुड़ जाता है। दुनिया में जो नाना पंथ बने हुए हैं, उनमें मनुष्य को पड़ने की जरूरत नहीं थी, लेकिन पड़ी है, और मनुष्य पंथों में बह जाते हैं।

यहाँ पर धर्म विरुद्ध पंथ यह सवाल पेश करके, नानक ने पंथों का निषेध किया है। वेदों में भी यह पाया जाता है। **"पथां, विसर्गे धरुणेषु तस्थौ"**—जीवन का आधार शाश्वत धर्मतत्त्वों पर (धरुणेषु) खड़ा है, जहाँ सब पंथों का विसर्जन होता है (पथां विसर्गे)।

१५

"मंनै पावहि मोखु दुआरु।
मंनै परवारै साधारु।
मंनै तरै तारे गुरु सिख।
मंनै नानक भवहि न भिख।
ऐसा नामु निरंजनु होइ।
जे को मंनि जाणै मनि कोइ" ॥ १५

मनन करने से मनुष्य मोक्ष-द्वार में पैठता है। और मनन से इस दुनिया में अपने परिवार को यानी समाज को भी आधार देता है। मनन करने से गुरु और शिष्य दोनों तरते हैं, और तारते हैं। गुरु खुद तरता है, और शिष्य को तारता है। नानक कहते हैं कि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मनन करने से दुनिया में भीख नहीं माँगनी पड़ती। यानी मनन करनेवाला भवसागर में घूमता नहीं फिरेगा।

प्रभु का नाम निरंजन-निष्कलंक है। जो उस निष्कलंक नाम का मनन करेगा, उसके चित्त में प्रकाश फैलेगा। निरंजन परमेश्वर का चिंतन करने से, मन में अंजन नहीं रहेगा, उसे विश्व का ज्ञान होगा।

मनन की पौड़ियाँ यहाँ खत्म होती हैं। अब आगे निदिध्यास की पौड़ियाँ शुरू होंगी।

१६

'श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः'—इस प्रक्रिया के अनुसार श्रवण और मनन की महिमा की पौड़ियाँ समाप्त होने पर अब निदिध्यास का, ध्यान का विभाग आरंभ होता है। मनन में बुद्धि का उपयोग होता है। ध्यान बुद्धि से परे चला जाता है। इसलिए नानक ने ध्यान की व्याख्या की है, प्यार करना। ध्यान करना यानी किसी चीज में इतने तन्मय हो जाना, कि उसके सिवा दूसरी बात ही न सूझे। उपनिषदों में निदिध्यास के मानी है, वही चीज घोट-घोटकर आत्मसात् करना, उसका साक्षात् अनुभव करना।

"पंच परवाण पंच परधानु।
पंचे पावहि दरगहि मानु।
पंचे सोहहि दरि राजानु।
पंचा का गुरु एकु धिआनु।
जे को कहै करै वीचारु।
करते कै करणै नाही सुमारु।
धौलु धरमु दइआ का पूतु।
संतोखु थापि रखिआ जिनि सूति।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जे को बुझै होवै सचिआरु।
धवलै उपरि केता भारु।
धरती होरु परै होरु होरु।
तिस ते भारु तलै कवणु जोरु।
जीअ जाति रंगा के नाव।
सभना लिखिआ वुड़ी कलाम।
एहु लेखा लिखि जाणै कोइ।
लेखा लिखिआ केता होइ।
केता ताणु सुआलिहु रूपु।
केती दाति जाणै कौणु कूतु।
कीता पसाउ एको कवाउ।
तिस ते होए लख दरीआउ।
कुदरति कवण कहा वीचारु।
वारिआ न जावा एक वार।
जो तुधु भावै साई भली कार।
तू सदा सलामति निरंकार" ॥ १६

जो पंच हैं, वे मान्य (परवाण) हैं। वे ही पंच 'परधान' हो जायेंगे। दुनिया उन्हें मान्य करेगी, यह भी अर्थ हो सकता है, और भगवान् उन्हें मान्य करेगा, यह भी अर्थ हो सकता है। जो भगवान् का चिंतन करनेवाला है, उसे नानक ने नाम दिया है—'पंच'। मनन करनेवाले मनुष्य, पंच, दुनिया को और समाज को कबूल हो सकते हैं। और वे ही परधान माने जाने चाहिए। जो भगवन्नाम का, या गुरुमंत्र का या गुरुमुख से प्राप्त नाम का—वेद का—श्रवण, मनन, करनेवाले पंच हैं, वे मान, इज्जत, पायेंगे। दूसरा अर्थ यह होगा कि, वे भगवान् के दरगाह में, धार्मिक क्षेत्र में, मान, इज्जत, पायेंगे। राजा के दरबार में भी वे ही शोभा पायेंगे। यानी सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, प्रतिष्ठा उन्हींको

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्राप्त होगी, जो भगवान् की विभूति का श्रवण, मनन, ध्यान, करेंगे। उन पंचों का, संतों का, साधकों का, गुरु ही एक ध्यान है। अर्थात् वे केवल गुरुमय हो गये हैं। उन्हें अपना अहंकार नहीं रहा है। इसलिए वे गुरुमय होकर, ऊपर बतायी हुई तिहरी इज्जत प्राप्त करते हैं। यह सारा पंचों को भी लागू होता है। 'एक ध्यान' यानी, एक मत से पंच कारोबार चलायेंगे। क्योंकि गुरु ही उनका एक ध्यान है, इसलिए वे आपस में चर्चा करके एकमत से फैसला करेंगे। यह स्थूल अर्थ भी उसमें से निकल सकता है।

वादी जो भी कहें और विचारक जो भी विचार करें, सृष्टि-कर्त्ता ने जो कुछ कृति की है, उसका कोई अन्दाज नहीं लग सकता। उसकी जो करामात है, उसका हिसाब नहीं है। अर्थात् वह अनाकलनीय है।

'धौलु धरमु दइआ का पूतु·····' इसमें सृष्टि-रचना का एक सूत्र ही कह दिया है। धर्म धवल, सफेद रग का, एक बैल है। महाभारत में कहा है **'धर्मो वृषः'**। वह कृतयुग में चार पादवाला, साबित पाँववाला, होता है। त्रेतायुग में उसका एक पाँव कट जाता है, द्वापर में दो पाँव कट जाते हैं, और कलियुग में वह एक पाँव पर ही चलता है। यह धर्मरूपी बैल सारी दुनिया को संभालता है। कौन-सा बैल है, जो पृथ्वी का बोझ उठा रहा है? वह धर्म है, जो दया का पुत्र है। गाय बैल की जननी है, तो यहाँ पर दया को गाय का रूप दिया है। दयारूपी गोमाता का पुत्र बैल, धर्म है, जिसने संतोष के द्वारा, परस्पर सन्तोष के आधार पर दुनिया में 'सूति' यानी सुव्यवस्थित योजना, रचना, (हार्मनी) सुसंगति, सुसंवाद, बनाया है। उसने संतोष से दुनिया में एक-तानता, एकरसता, पैदा की है। मूल में दया, परमेश्वर की करुणा, उत्पन्न हुई, तभी सृष्टि उत्पन्न हुई, अन्यथा वह था ही स्वयंभू। लेकिन करुणा के कारण सृष्टि उत्पन्न हुई और धर्म ने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भार उठाया। उस राजा का वजीर संतोष है, जिसके बिना सृष्टि-व्यवस्था असंभव है। उसीके कारण एकसूत्रता, एकरसता उत्पन्न हुई।

'जे को बुझै'—जो कोई यह बात समझेगा, वह सच्चा बनेगा। परमात्मा सत्यस्वरूप है, वैसा वह भी सत्यस्वरूप बनेगा। हमें यह पहचानना चाहिए कि एक ही सत्यस्वरूप भगवान् सृष्टि में भरा है। यहाँ एक ही चौपाई में सृष्टिरचना का सारा रहस्य बता दिया है। मूल परमेश्वर सत्यस्वरूप है। उसे दया आयी, इसलिए सृष्टि पैदा हुई; फिर उससे धर्म पैदा हुआ, धर्म ने अपने काम के लिए संतोष की स्थापना की, जो सुसंगति, सुसंवाद (हार्मनी) पैदा करता है। जो कोई यह समझेगा, उसके ध्यान में आयेगा, कि उस बैल (धवलै) पर, कितना भार है ! सबका सब भार उसी पर है। वैज्ञानिक जिसे सृष्टि का 'आकर्षण' कहते हैं, उसे यहाँ 'धर्म' कहा है। यानी इस परिभाषा का रूपांतर विज्ञान में किया जा सकता है।

'धरती होरु परै'—धरती के ऊपर धरती है, उसके ऊपर और धरती है। जो खगोलशास्त्र (ॲस्ट्रॉनॉमी) सीखेगा, उसके ध्यान में आयेगा कि ऊपर-ऊपर कितना है। वेद में एक 'अघमर्षण सूक्त' है, जो सन्ध्योपासना में बोला जाता है। वेद के एक-एक मंत्र का उपयोग, भिन्न-भिन्न पापों के नाश के लिए होता है। लेकिन अघमर्षण सूक्त सब पापों का क्षालन करता है। उस सूक्त में पाप-विनाशन का कोई उल्लेख ही नहीं है, बल्कि उसमें यह बताया है कि सृष्टि कैसे बनी। 'परमेश्वर ने आरम्भ में जप किया, तो उसे सूझा नहीं कि सृष्टि कैसे बने। फिर उसने तप किया, चिंतन किया। सर्जन के लिए ज्ञानयुक्त तप किया। उसने चिन्तन करके 'ऋत' और 'सत्य' ये दो तत्त्व निकाले। फिर उनमें से दिवस, रात्रि,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सूर्य, चन्द्र, काल, आदि उत्पन्न हुए।' इसमें सृष्टि-रचना का, उसकी विशालता का, उसके मूल में जाकर संशोधन करने का, तत्त्व समझाया है। इसके परिणामस्वरूप चित्त में अहंकार रह नहीं सकता। इस शरीर की क्षुद्रता प्रतिक्षण प्रतीत होगी। ऐसे मनुष्य से पाप नहीं होंगे। वेद के सूक्त में यह जो कहा गया है, वही नानक ने थोड़े में कहा है, कि जो उस सृष्टि-रचना को समझेगा, वह सत्यस्वरूप होगा। जो इस पर सोचेगा, उसके ध्यान में आयेगा, कि ऊपर-ऊपर कितना है। पूछा गया है कि धर्मरूप बैल जो यह सारा भार उठा रहा है, उसके नीचे, कौन जोर है? सबका आधार धर्म है, लेकिन आखिर धर्म को भी कोई आधार होना चाहिए! धर्म को किसका आधार है? यह सोचते-सोचते हम परमात्मा के पास पहुँच जाते हैं। उस धर्म पर कितना बोझ है, यह देखतं-देखते हम पीछे-पीछे चले जायँ, इस भूमि को उसका आधार, उसको उसका आधार, ऐसा करते-करते पीछे चले जाते हैं, तो परमेश्वर के पास पहुँच जाते हैं।

दुनिया में अनेक जीव, और जातियाँ, और रंग, और उनके नाम, सभी भगवान् के लेखन में अंकित हैं, जो एक चलते हुए लेखन में या चलती हुई कलम से सतत लिखे ही जा रहे हैं। उसका हिसाब दूसरा कौन लिख सकेगा? कोई लिखने बैठेगा तो वह कितना बड़ा होगा? भगवान् का बल कितना अपार है? उसका रूप कितना सुन्दर है? उसकी देनें कितनी हैं? उसकी शक्ति का, औदार्य का, सौन्दर्य का, ठीक हिसाब कैसे बताया जाय? 'कीता पसाउ....' उसका "पसाउ" यानी पसारा कितना व्यापक, विशाल है, उसका विस्तार कितना है? थोड़े में उत्तर है—'एक शब्द' (**कवाउ**)। बाइबिल में आया है कि आरम्भ में शब्द था। सृष्टि **शब्द-प्रसवा** है। यहाँ भी वही कहा है, कि आरम्भ में परमेश्वर का एक ही शब्द था। उस एक उद्‌गम स्थान से लाखों नदियाँ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फूट निकली हैं। यानी एक ही शब्द में से, लाखों विचार-प्रवाह फूट निकले हैं।

'कुदरति कवण ....' इसका अर्थ दो प्रकार से हो सकता है। १. मेरी कौन कुदरत यानी कूवत, कि मैं (भगवान् के विषय में) विचार कह सकूँ ? २. मैं कौन हूँ, कि भगवान् की कुदरत का विचार कर सकूँ ? मैं इतना ही कह सकता हूँ, कि मैं उस पर एक बार भी न्योछावर होने लायक नहीं हूँ। 'जो तुधु भावै....' हे परमात्मन्, तुझे जो भला जँचे, उसीको सत्कर्म कहेंगे। नीतिशास्त्र में (एथिक्स में), चर्चा की जाती है कि उत्तम कार्य कौन-सा माना जाय। यहाँ कहा है, कि जो तुझे पसन्द है, वही उत्तम कार्य है। परमेश्वर को क्या पसन्द है, इसका अन्दाजा शुद्ध पुरुष को होता है, हृदय-शुद्धि के बाद अंतरात्मा में उसका अन्दाज होता है। तू निरंकार है, यानी निराकार है। हमेशा के लिए तू सलामत है। सृष्टि की हर चीज नश्वर है, परन्तु तू सलामत है। आकार टूटेगा, परन्तु आकार के पीछे जो निराकार है, वह कायम रहेगा। उसे किसी प्रकार का कोई धोखा, खतरा, नहीं है।

१७

"असंख जप असंख भाउ।
असंख पूजा असंख तप ताउ।
असंख गरंथ मुखि वेद पाठ।
असंख जोग मनि रहहि उदास।
असंख भगत गुण गिआन वीचार।
असंख सती असंख दातार।
असंख सूर मुह भख सार।
असंख मोनि लिव लाइ तार।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सूर्य, चन्द्र, काल, आदि उत्पन्न हुए।' इसमें सृष्टि-रचना का, उसकी विशालता का, उसके मूल में जाकर संशोधन करने का, तत्त्व समझाया है। इसके परिणामस्वरूप चित्त में अहंकार रह नहीं सकता। इस शरीर की क्षुद्रता प्रतिक्षण प्रतीत होगी। ऐसे मनुष्य से पाप नहीं होंगे। वेद के सूक्त में यह जो कहा गया है, वही नानक ने थोड़े में कहा है, कि जो उस सृष्टि-रचना को समझेगा, वह सत्यस्वरूप होगा। जो इस पर सोचेगा, उसके ध्यान में आयेगा, कि ऊपर-ऊपर कितना है। पूछा गया है कि धर्मरूप बैल जो यह सारा भार उठा रहा है, उसके नीचे, कौन जोर है? सबका आधार धर्म है, लेकिन आखिर धर्म को भी कोई आधार होना चाहिए! धर्म को किसका आधार है? यह सोचते-सोचते हम परमात्मा के पास पहुँच जाते हैं। उस धर्म पर कितना बोझ है, यह देखते-देखते हम पीछे-पीछे चले जायँ, इस भूमि को उसका आधार, उसको उसका आधार, ऐसा करते-करते पीछे चले जाते हैं, तो परमेश्वर के पास पहुँच जाते हैं।

दुनिया में अनेक जीव, और जातियाँ, और रंग, और उनके नाम, सभी भगवान् के लेखन में अंकित हैं, जो एक चलते हुए लेखन में या चलती हुई कलम से सतत लिखे ही जा रहे हैं। उसका हिसाब दूसरा कौन लिख सकेगा? कोई लिखने बैठेगा तो वह कितना बड़ा होगा? भगवान् का बल कितना अपार है? उसका रूप कितना सुन्दर है? उसकी देनें कितनी हैं? उसकी शक्ति का, औदार्य का, सौन्दर्य का, ठीक हिसाब कैसे बताया जाय? 'कीता पसाउ····' उसका "पसाउ" यानी पसारा कितना व्यापक, विशाल है, उसका विस्तार कितना है? थोड़े में उत्तर है—'एक शब्द' (**कवाउ**)। बाइबिल में आया है कि आरम्भ में शब्द था। सृष्टि **शब्द-प्रसवा** है। यहाँ भी वही कहा है, कि आरम्भ में परमेश्वर का एक ही शब्द था। उस एक उद्गम स्थान से लाखों नदियाँ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फूट निकली हैं। यानी एक ही शब्द में से, लाखों विचार-प्रवाह फूट निकले हैं।

'कुदरति कवण ....' इसका अर्थ दो प्रकार से हो सकता है। १. मेरी कौन कुदरत यानी कूवत, कि मैं (भगवान् के विषय में) विचार कह सकूँ ? २. मैं कौन हूँ, कि भगवान् की कुदरत का विचार कर सकूँ ? मैं इतना ही कह सकता हूँ, कि मैं उस पर एक बार भी न्योछावर होने लायक नहीं हूँ। **'जो तुधु भावै....'** हे परमात्मन्, तुझे जो भला जँचे, उसीको सत्कर्म कहेंगे। नीतिशास्त्र में (एथिक्स में), चर्चा की जाती है कि उत्तम कार्य कौन-सा माना जाय। यहाँ कहा है, कि जो तुझे पसन्द है, वही उत्तम कार्य है। परमेश्वर को क्या पसन्द है, इसका अन्दाजा शुद्ध पुरुष को होता है, हृदय-शुद्धि के बाद अंतरात्मा में उसका अन्दाज होता है। तू निरंकार है, यानी निराकार है। हमेशा के लिए तू सलामत है। सृष्टि की हर चीज नश्वर है, परन्तु तू सलामत है। आकार टूटेगा, परन्तु आकार के पीछे जो निराकार है, वह कायम रहेगा। उसे किसी प्रकार का कोई धोखा, खतरा, नहीं है।

१७

"असंख जप असंख भाउ।
असंख पूजा असंख तप ताउ।
असंख गरंथ मुखि वेद पाठ।
असंख जोग मनि रहहि उदास।
असंख भगत गुण गिआन वीचार।
असंख सती असंख दातार।
असंख सूर मुह भख सार।
असंख मोनि लिव लाइ तार।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुदरति कवण कहा वीचारु।
वारिआ न जावा एक वार।
जो तुधु भावै साई भली कार।
तू सदा सलामति निरंकार" ॥ १७

इस पौड़ी में भगवान् की लीला का विस्तार बताया है। तदन्तर्गत साधकों की साधना का विचार भी बताया है। साधना में असंख्य प्रकार के जप चलते हैं, असंख्य भाव, भावनाएँ चलती हैं। अनेक प्रकार की पूजाएँ चलती हैं, अनेक संकेत निकलते हैं, तरह-तरह के सेवा के काम किये जाते हैं, जिनमें मनुष्य को अनेकविध तापदायक तपस्याएँ करनी पड़ती हैं। वेदपाठ का एक बड़ा साधन है, जिसके रटन में लोग अपना जीवन लगाते हैं। दूसरे भी असंख्य ग्रन्थ हैं, जिनका पठन किया जाता है। असंख्य योगी होते हैं, जो मन में वैराग्य रखकर दुनिया में काम करते हैं। अनेक भक्त भगवान् के गुणों का और ज्ञान का चिन्तन करते हैं। सगुण का गुणानुवाद, और निर्गुण का ब्रह्मनिरूपण करते हैं। 'सती' यानी सत्यनिष्ठ पुरुष, असंख्य होते हैं। विविध दान देनेवाले दातार होते हैं। असंख्य शूर पुरुष होते हैं, जो मुँह पर तलवार का घाव सहन करते हैं, यानी समाज के बचाव के लिए अपना बलिदान देते हैं। 'सार' यानी तलवार। ऐसे असंख्य मौनी होते हैं, जो बिलकुल ध्यानस्थ होकर, इन्द्रियों को, मन को, बुद्धि को, आत्मा में लीन करते हैं। इस तरह साधना के, और साधकों के अनेक प्रकार हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१८

असंख मूरख अंध घोर।
असंख चोर हरामखोर।
असंख अमर करि जाहि जोर।
असंख गलवढ हतिआ कमाहि।
असंख पापी पापु करि जाहि।
असंख कूड़िआर कूड़े फिराहि।
असंख मलेछ मलु भखि खाहि।
असंख निंदक सिरि करहि भारु।
नानकु नीचु कहै वीचारु।
वारिआ न जावा एक वार।
तो तुधु भावै साई भली कार।
तू सदा सलामति निरंकार" ॥ १८

समाज के अदर जो अनेक प्रकार के दुराचरण के कार्य चलते हैं, उनका जिक्र यहाँ आया है। इसमें नीति का जिक्र है। एक ओर समाज में असंख्य मूर्ख गाढ़ अज्ञान में, घने अँधेरे में, तमोगुण में, पड़े हैं, और दूसरी ओर, हराम का खानेवाले, लूटनेवाले, रजोगुणी, शोषक वर्ग के, लोग पड़े हैं। 'अमर' शब्द अरबी है, जिसके मानी है—राज्य-सत्ता चलाना। उन दो वर्गों के परिणाम-स्वरूप, समाज में एक तीसरा सत्ताधारी वर्ग खड़ा होता है, जो जबरदस्ती से शासन करता है, उनके नाम पर सत्ता चलाता है। उसके अलावा असंख्य लोग गला काटनेवाले हैं, जो खूँखारी करके कमाई करते हैं। फिर असंख्य पापी हैं, जो पाप करते हैं। यहाँ पाप का अर्थ व्यभिचारादि पाप भी लिया जा सकता है, क्योंकि उसका उच्चारण नहीं किया है। इसका अर्थ सर्वसाधारण पाप भी हो सकता है। समाज में असंख्य झूठे (कूड़िआर) लोग हैं, जो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

झूठे काम करते चले जाते हैं। 'म्लेच्छ' संस्कृत शब्द है, जिसका अर्थ यहाँ पर किया है, मल की इच्छा करनेवाले। मूल 'म्लेच्छ' शब्द से यह अर्थ नहीं निकलता। ('म्लेच्छ' शब्द का मूल अर्थ है, 'अनार्य', जो शब्द का ठीक उच्चारण नहीं करते। पाणिनि ने कहा है, ब्राह्मण को चाहिए कि वह गलत उच्चारण न करे। गलत उच्चारण करनेवाला म्लेच्छ, ऐसा व्याकरण-महाभाष्य में कहा है।) यहाँ पर 'म्लेच्छ' शब्द के दो-तीन अर्थ हो सकते हैं: १. पाप की कमाई करते हैं, मानो पाप खाते हैं, २. मलिन इच्छा रखते हैं, और ३. मांसादि निषिद्ध आहार करते हैं। अन्त में कहा है कि समाज में असंख्य निन्दक पड़े हैं, जो चोर, 'अंध घोर' (घोर अज्ञानी), आदि सबके ऊपर सिरजोर हैं, सबसे बढ़कर हैं। निंदा करनेवाले सबके पापों का बोझ उठा लेते हैं। निंदा करनेवाला जिस-जिसकी निंदा करता है, उसके पाप का बोझ उठा लेता है। जैसे गाँव के घूरे में सारा कचरा इकट्ठा होता है, वैसे ही निन्दा करनेवाले के चित्त में सबका पाप भरा रहता है। इन सब पापों का विचार करना पड़ा, और वर्णन से वाणी को कष्ट देना पड़ा, इसलिए नानक ने अपने को 'नीच' कहा है।

पाप का यह विभाग सोचने लायक है। यहाँ पर अज्ञान की गिनती पाप में की है। नीतिशास्त्र का यह एक सूक्ष्म विषय है। गीता में अज्ञान की गिनती आसुरी संपत्ति में की है, क्योंकि बहुत-से पाप अज्ञानमूलक होते हैं। इसलिए अज्ञान को निर्दोष (इनोसेंट) नहीं कहा जायगा। यहाँ पर अज्ञान, चोरी, सत्ता चलाना, हिंसा, अब्रह्मचर्य, असत्य, आहारादि में अशुद्धि, और उन सबकी निन्दा करनेवाला—उनसे बढ़कर पाप है, इस तरह बड़ा ही सुन्दर विवेचन किया है। जिसे हमारे शास्त्रों ने 'पंच यम' कहा है—अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह—इन पाँचों के विरोध में पाँच पाप होते हैं। अहिंसा के विरोध में हिंसा, सत्य के विरोध में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

असत्य, अस्तेय के विरोध में चोरी, ब्रह्मचर्य के विरोध में व्यभिचार, अपरिग्रह के विरोध में परिग्रह। बौद्धों ने जिसे 'पंच शील' कहा है, और वैदिकों ने 'पंच यम' कहा है, उनके विरोध में होनेवाले पापों का यहाँ जिक्र है। और आहार-शुद्धि की भी बात कही है, जो हिन्दुस्तान की साधना में एक बहुत बड़ी बात मानी गयी है। उपनिषदों में, गीता में, और कुल साधना-मार्ग में ही, आहार-शुद्धि पर जोर दिया है। केवल आहार-शुद्धि पर जोर देना और दूसरे पापों को चलाते रहना गलत है। आहार का असर जीवन पर होता है, इसलिए समाजशास्त्रियों ने भी उस पर विचार किया है। लेकिन योगशास्त्र में, भक्तिमार्ग में, और जैनधर्म में, आहार-शुद्धि पर जितना जोर दिया जाता है, उतना अन्यत्र नहीं दिया जाता।

इस तरह यहाँ पर यमादि के विरुद्ध 'पंच पाप', उन सबके मूल में अज्ञान, आहार-अशुद्धि, और इन यमादि की निन्दा करनेवाले शिरोमणि पाप, जो बहुत भयानक पाप हैं, इन सबका वर्णन करके, नानक ने अपना भी नाम, उस वर्ग में दर्ज किया है। तुलसीदास ने भी पापियों का वर्णन करके ऐसा ही कहा है। महापुरुष ऐसे ख्याल से नहीं सोचते हैं कि दुनिया में दूसरे पापी हैं, बल्कि वे पापों का वर्णन इसलिए करते हैं, कि मैं ही वह पापी हूँ। अन्यथा सत्यनिष्ठ पुरुष को पापों का वर्णन रोचक नहीं मालूम होता है। तुलसीदास ने कहा है : **'जे जनमे कलिकाल कराला। करतब बायस बेष मराला'**—कलियुग में जो जनमे हैं, वे पापी कौए का काम करते हैं, लेकिन वेश मराल का धरते हैं। **'तिन्ह महँ प्रथम रेख जग मोरी'**–ऐसे पापियों में प्रथम नाम मेरा है।' **धींग धरमध्वज धंधक धोरी'**—धर्म का ध्वज खड़ा करनेवाले ऐसे दांभिक का धिक्कार है। नानक ने ठीक ऐसा ही कहा है : **'नानकु नीचु कहै वीचारु।'** नीच नानक यह वर्णन कर रहा है। यानी नानक, उन पापियों का

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वर्णन करने के बाद, अपनी ही गिनती उन पापियों में करके, उस वर्णन से मुक्ति पा रहे हैं।

इन तीन पौड़ियों में, और बाद की पौड़ी में जो वर्णन आया है, वह कुल मिलाकर परमेश्वर की व्याप्ति का सूचक है। परमेश्वर की कुदरत में व्याप्ति, साधनाक्षेत्र में व्याप्ति, और समाज के दुर्व्यवहार में व्याप्ति का वर्णन है। उसीकी प्रेरणा से दुनिया में सब हो रहा है। नीति बताने के लिए यहाँ पाप कहे हैं। सृष्टि के, साधना के, और समाज के, वर्णन से यह तात्पर्य निकलता है, कि परमेश्वर की अनन्त विभूतियाँ हैं। परमेश्वर की धर्ममय रचना बहुत व्यापक है, और उसका कोई अंदाजा हम नहीं कर सकते हैं।

१९

"असंख नाव असंख थाव।
अगंम अगंम असंख लोअ।
असंख कहहि सिरि भारु होइ।
अखरी नामु अखरी सालाह।
अखरी गिआनु गीत गुण गाह।
अखरी लिखणु बोलणु बाणि।
अखरा सिरि संजोगु वखाणि।
जिनि एहि लिखे तिसु सिरि नाहि।
जिव फुरमाए तिव तिव पाहि।
जेता कीता तेता नाउ।
विणु नावै नाही को थाउ।
कुदरति कवण कहा वीचारु।
वारिआ न जावा एक वार।
जो तुधु भावै साई भली कार।
तू सदा सलामति निरंकार" ॥ १९

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

'विष्णुसहस्रनाम' में भगवान् के हजार नाम बताये हैं। लेकिन उसके नाम तो अनंत हैं, उनको संख्या नहीं बतायी जा सकती। उसके स्थान, 'थाव' भी असंख्य हैं। कोई कहता है कि वह बद्रा-केदार में है, तो कोई कहता है कि काशी में है। लेकिन दुनिया में जितने स्थान हैं, सब उसके स्थान हैं। 'लाअ' यानी लोक भी असंख्य, अगम्य हैं। जैसे वरुणलोक, चंद्रलोक आदि। लेकिन असंख्य कहने से भी सिर पर एक भार होता है। इसलिए असंख्य, अनगिनत, कहना भी ठीक नहीं है। क्योंकि वह शब्द गिनती के लिए अवकाश रखता है। कहने का तात्पर्य यह है, कि सृष्टि में अनन्त पदार्थ पड़े हैं, यह कहना ठीक नहीं है। एक ही पदार्थ है।

हम भगवान् का नाम लेने की बात करते हैं। वह अक्षरों में है। 'ओं' एक अक्षर है, 'हरि' 'राम' दो-दो अक्षर हैं, 'गाविन्द' तीन अक्षर हैं, 'नारायण' चार अक्षर हैं। वास्तव में भगवान् का नाम अक्षरों में नहीं आयेगा। 'सालाह' अरबी शब्द है, जिसके मानी है, स्तुति। वह भी अक्षरों में हो होती है। परमेश्वर के गीत गाये जाते हैं, उनकी ज्ञान-महिमा का वर्णन किया जाता है, गुण-वर्णन होता है, वह सब अक्षरात्मक है। वाणी लिखी जाती है, बोली जाती है, वह सब अक्षरात्मक है। 'सिरि संजोगु'—हरएक के सिर पर, कपाल पर जो दैव विवरण लिखा है, वह भो अक्षरात्मक हो है। कहने का तात्पर्य यह है कि जैसे वेदांत ने कहा है—**'वाचारम्भणम्'**, वैसा वास्तव में वह शब्द से परे है, परंतु शब्द इस्तेमाल करके हम उसका वर्णन करते हैं। लेकिन जिसने यह लिखा है, उसके सिर पर कुछ भी लिखा हुआ नहीं है, वह स्वतन्त्र है। जो कुछ लिखा गया है, सृष्टि के कानून के वश है, लेकिन परमात्मा, परमेश्वर उससे परे है। वह जैसे फरमायेगा, वैसा ही प्राप्त होगा। सारांश, भगवान् ने जितना किया है, सब उसका नाम हो नाम है। भगवान् के नाम के बिना कोई जगह खाली नहीं है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साधना कई तरह की होती है। उन सब साधनाओं में श्रेष्ठ साधना, भगवान् पर प्यार और भगवान् का नाम ही है।

यहाँ पर निदिध्यास का हिस्सा खत्म होता है, और साथ ही बारह पौड़ियों का जपुजी का दूसरा हिस्सा भी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

३. भगवद्-महिमा

२०

"भरीऐ हथु पैरु तनु देह।
पाणी धोतै उतरसु खेह।
मूत पलीती कपड़ु होइ।
दे साबूणु लईऐ ओहु धोइ।
भरीऐ मति पापा कै संगि।
ओहु धोपै नावै कै रंगि।
पुंनी पापी आखणु नाहि।
करि करि करणा लिखि लै जाहु।
आपे बीजि आपे ही खाहु।
नानक हुकमी आवहु जाहु" ॥ २०

शरीर के हाथ-पाँव आदि अवयव (तनु) मैल से भरे हों, तो पानी से धो लेने पर मैल उतर जाता है। 'खेह' यानी मिट्टी अर्थात् मैल। उससे कठिन मैल हो, जैसे मूत्र के कारण कपड़े गंदे हुए हों, तो मामूली पानी से वह गन्दगी नहीं छूटती, इसलिए हम साबुन से धो डालते हैं। और भी खराब मैल हो तो क्या करेंगे ? पाप की संगति से मति मलीन हुई हो, तो वह किस पानी से धोयी जायगी ? वह भगवन्नाम के प्रेम से ही धोयी जायगी। 'रंग' यानी भगवान् के नाम में प्रेम से तन्मय होना। यही बुद्धि के मैल धोने का एक साबुन है। ऐसे ऊपर से देखा जाय, तो यह पुण्यवान्

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(पुंनी), यह पापी, यह कहने की बात नहीं है। कोई किसीको पुण्यवान या पापी नहीं बता सकता। अपनी-अपनी कृति के अनुसार जो लिखा रहेगा, वही लेकर जाओ। जैसा बीज बोओ, वैसा पाओ। खुद बोकर खुद ही खाओ। नानक कहते हैं, कि इस प्रकार भगवान् के हुक्म से, आओ और जाओ। कर्म करते चले जाओ, उसका फल भुगतो, मरो और जनमो, जनमो और मरो। पाप-पुण्य किया करो। कभी यह फल चखने को मिलेगा, तो कभी वह।

२१

"तीरथु तपु दइआ दतु दानु।
जे को पावै तिल का मानु।
सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ।
अंतरगति तीरथि मलि नाउ।
सभि गुण तेरे मै नाही कोइ।
विणु गुण कीते भगति न होइ।
सुअसति आथि बाणी बरमाउ।
सति सुहाणु सदा मनि चाउ"।–

तीरथ करो, तप करो, दया रखो, दान दो—ये साधन करो, उससे कुछ मान मिलेगा तो वह छोटा, (तिल का) मान होगा। दूसरा अर्थ यह होगा, कि परमेश्वरस्वरूप का मान, अन्दाजा, लगे तो भी वह बहुत थोड़ा होगा। ये सारे साधन बड़े नहीं हैं। मुझे शंका है कि यहाँ 'दतु' का अर्थ 'दम' होगा, जैसे आगे **'जतु पाहारा'** में 'जतु' (संस्कृत–यम्) यानी जाब्ता रखना। संस्कृत 'दम्' धातु से 'दतु' बना होगा। काम, क्रोध, लोभ, के विरोध में दम, दया, दान, यह अर्थ हो सकता है। लेकिन यहाँ पर किसीने वैसा अर्थ किया नहीं, बल्कि 'दतु दान' यानी दत्त दान, दिया हुआ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दान, ऐसा ही अर्थ सबने किया है। तीर्थ, तप, दया, दान, आदि साधन करने से थोड़ी-सी इज्जत, प्रतिष्ठा मिलेगी, ईश्वर की थोड़ी-सी झाँकी मिलेगी, लेकिन उसका पूरा दर्शन प्राप्त करने के लिए तो श्रवण, मनन, मन में उसके लिए भाव, प्रेम, करना होगा। **'श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः।'** यहाँ निदिध्यास के बदले मन में भाव करना, प्रेम करना, चीज को खूब चाहना, यह कहा है। जिस चीज को हम खूब चाहते हैं, उसका मन में बार-बार खयाल आता है। तीर्थ, तप, दान, ये साधन हमें कुछ हद तक आगे ले जायेंगे, लेकिन उससे आगे जाने के लिए श्रवण, मनन, निदिध्यास, आदि चाहिए। यानी बिलकुल वेदान्त कहा है। तीर्थ में स्नान करने से बाहर का मैल धोया जाता है, लेकिन मन का मैल भगवान् के नाम से धोया जाता है। 'अंतरगति तीरथि' बड़ा सुन्दर शब्द है। शंकराचार्य ने 'मानस-तीर्थ' कहा है। जो अंतर्गत तीर्थ है, उसमें मल-मलकर नहाने से ही सफाई होती है। अंतः-शुद्धि के लिए, श्रवण-मनन आदि चीजें काम देंगी। श्रवण, मनन, भावन, यही वास्तव में अन्तःस्नान है। संतों के मुख से, और जिन्होंने भगवान् को पाया है उनके मुख से श्रवण, यह मनुष्य-जन्म का परम भाग्य है। भगवान् गुरुमुख में समाये हैं—**'गुरमुखि रहिआ समाई'**। सत्पुरुष की वाणी से श्रवण, उस पर मनन, और उस पर प्यार करने से, मानस शुद्ध होता है। यही अंतर्गत तीर्थ में स्नान है।

अब स्नान की प्रक्रिया शुरू कर रहे हैं। **'सभि गुण तेरे'**—हे भगवन्, जितने भी गुण हैं, सब तेरे हैं, मैं कुछ भी नहीं हूँ। जो अपने में गुणारोपण करता है, वह कुछ भी नहीं समझता। सब गुणों की ज्योति परमेश्वर में पड़ी है। इसलिए जितने गुण हैं, सब आत्मा के हैं, और दोष देह के हैं। इसलिए किसीके दोषों का चिन्तन नहीं करना चाहिए, यह समझकर कि देह के साथ वे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जानेवाले हैं। देहवान् मनुष्य के गुण भगवान् की देह के अंतर्गत हैं। सत्य, प्रेम, आदि सारे परमेश्वर के गुण हैं, जो मनुष्य के लिए लाभदायी हैं। अहंकार में एक भी गुण नहीं है।

इसके बाद नानक ने एक सूत्र लिखा है—**'विणु गुण कीते भगति न होई'**। जब तक हम गुणों को प्राप्त नहीं करेंगे, तब तक भक्ति की प्राप्ति नहीं होगी। जितने अंश में हम भगवान् के गुणों को प्राप्त करेंगे, उतने अंश में ही हम भक्ति प्राप्त करेंगे। इसलिए भगवान् के गुणों का अनुशीलन करना चाहिए। शंकराचार्य ने भक्ति को **'स्वस्वरूपानुसन्धानम्'** कहा है। अपने मूल स्वरूप का अनुसंधान ही भक्ति है। मोक्ष के जितने साधन हैं, उनमें भक्ति श्रेष्ठ है। मूलस्वरूप सद्गुणों से भरा है। इसी प्रकार की व्याख्या यहाँ की है। बाइबिल में कहा है :' बी यी परफेक्ट् अैज् युवर् फादर् इन् हैवन् इज् परफेक्ट्'—जिस तरह तेरे स्वर्गस्थ पिता (परमेश्वर) परिपूर्ण हैं, उसी तरह तू भी परिपूर्ण हो। मैं अपूर्ण रहनेवाला नहीं हूँ, परिपूर्ण हो सकता हूँ। जब भगवान् के गुणों को प्राप्त किया जाता है, तब जीव और शिव में अंतर नहीं रहता। इसीका नाम है—'भक्ति'।

'सुअसति आथि बाणी बरमाउ'—यह चरण कठिन है। बहुतों ने इसके बहुत-से अर्थ किये हैं। मैंने इस प्रकार अर्थ किया है कि 'सुअसति' यानी स्वस्ति, 'आथि' यानी है, 'बाणी बरमाउ' यानी ब्रह्मवाणी। ब्रह्मवाणी ही स्वस्ति है। और जो तरह-तरह की वाणी है, जिसका हम उच्चारण करते हैं, उसमें सार नहीं। ब्रह्म-वाणी ही परमकल्याणमय है। दूसरा अर्थ यह है कि 'सुअसति' यानी शक्ति, 'आथि' यानी लक्ष्मी, 'बाणी' यानी सरस्वती और 'बरमाउ' यानी ब्रह्मदेव, सब तू ही है। मुझे यह हृदयंगम नहीं मालूम होता है। बल्कि यही अर्थ अच्छा लगता है कि परमकल्याणमय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मंगल, ब्रह्मवाणी का हम जप करते रहेंगे, तो ब्रह्म के जो सारे गुण हैं, वे हममें आयेंगे और फिर भक्ति होगी।

अब ब्रह्मवाणी का स्वरूप बताना चाहते हैं। **'सति सुहाणु सदा मनि चाउ**—'सति' यानि सत्यस्वरूप, 'सुहाणु' यानी शोभनीय, शिव, मंगल। 'सदा मनि चाउ' यानी चित्त को प्रसन्न करनेवाली, आनन्दस्वरूप। इन तीन गुणों से युक्त जो वाणी, वही ब्रह्मवाणी। सत्य, मंगल और आनन्द—ऐसी यहाँ त्रिपुटी है। इसीको आधुनिक भाषा में 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' कहते हैं। सत्य शिव सुन्दर का खयाल रखकर जो बोला जायगा, वही ब्रह्मजप होगा।

"कवणु सु वेला वखतु कवणु, कवण थिति कवणु वारु।
कवणि सि रुती माहु कवणु, जितु होआ आकारु।
वेल न पाईआ पंडती, जि होवै लेखु पुराणु।
वखतु न पाइओ कादीआ, जि लिखनि लेखु कुराणु।
थिति वारु ना जोगी जाणै, रुति माहु ना कोई।
जा करता सिरठी कउ साजे, आपे जाणै सोई।
किवकरि आखा किव सालाही, किउ वरनो किव जाणा।
नानक आखणि सभु को आखै, इकदू इकु सिआणा।
वडा साहिबु वडी नाई, कीता जा का होवै।
नानक जे को आपौ जाणै, अगै गइआ न सोहै।।" २१

अब परमेश्वर की अपार शक्तियों का, और विभूति का चिंतन हो रहा है। परमेश्वर की विभूति का एक अंग यह विश्व है, इसलिए विश्व का चिंतन हो रहा है। विश्व का आकार बना था, वह वेला कौन-सी थी, वक्त कौन-सा था आदि। इसका भावार्थ यह है, कि विश्व किस युग में पैदा हुआ। समय, तिथि, वार, ऋतु, और महीना, कौन-सा था, जब सृष्टि का आकार बना था? जिन्होंने बड़े-बड़े पुराण लिखे हैं, उन पंडितों को भी पता नहीं कि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सृष्टि की उत्पत्ति की वेला कौन-सी थी। जिन्होंने कुरान लिखा है, उन काजियों को भी सृष्टि की उत्पत्ति का वक्त मालूम नहीं। यानी कोई पुराण, कुरान, का ज्ञानी भले ही हो, उसे उसका ज्ञान नहीं है। सृष्टि की उत्पत्ति की तिथि, वार, ऋतु, और महीना, योगी को भी मालूम नहीं है। जिस कर्ता ने इस सृष्टि को पैदा किया और सजाया, वही जानता है, कि विश्व कब और कैसे बना। हम उसकी चाहे जितनी चर्चा करें, लेकिन अपनी अक्ल से उसका फ़ैसला नहीं कर सकते।

नासदीय-सूक्त एक अप्रतिम सूक्त है, जो हिन्दुस्तान के तत्त्व-ज्ञान का उद्‌गम-स्थान है। उसमें कहा है: "आरंभ में न सत् था—ऐसा कह सकते हैं, न असत् था—ऐसा कह सकते हैं। वह एक ऐसी अजीब चीज है, जिसका वर्णन सत् और असत् दोनों से भी नहीं कर सकते—'**नासदासीत् नो सदासीत्।**' तो आखिर यह सृष्टि कैसे पैदा हुई? विसृष्टि कैसे होती है, यह कौन जानता है, कौन कह सकता है? भाष्यकारों ने कहा है कि सृष्टि अनादि है, अनादि सृष्टि का आदि नहीं हो सकता है, इसलिए जब से परमेश्वर है, तब से सृष्टि है, आज के रूप में नहीं, परन्तु किसी-न-किसी रूप में है। इसलिए इसका आरंभ कैसे हुआ, यह सवाल बेजा है। नासदीय-सूक्त में आगे कहा है, कि इस सृष्टि का जो अध्यक्ष है, जो परम आकाश में रहता है, यानी अंतर्गत हृदयाकाश में रहता है, वह शायद जानता होगा, शायद नहीं जानता होगा—

'यो अस्याध्यक्षः परमे व्योमन्।
सो अंग वेद यदि वा न वेद॥'

इस सवाल का इससे बेहतर जवाब मुझे और कहीं भी नहीं मिला, जो नासदीय-सूक्त में दिया गया है। उसीका जिक्र करके नानक कहते हैं, कि पुराण-कुरान लिखनेवाले, ज्ञानी, योगी, कोई भी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इसका जवाब नहीं जानते हैं, इसलिए इसका निर्णय हमारी शक्ति से परे है।

'किव करि आखा'—हम उसको कैसे 'आख' सकते हैं? उसकी व्याख्या कैसे कर सकते हैं? उसकी प्रशंसा, वर्णन कैसे कर सकते हैं? भावार्थ यह है कि उसकी उत्पत्ति कब हुई, उसकी स्थिति कब तक है, उसका प्रलय कब होगा, और वह किसके अन्दर समाया हुआ है, कौन जानता है? नानक जानते हैं कि कहनेवाले तत्त्वज्ञानी खूब निकलनेवाले हैं। वे कहने के लिए कह डालेंगे, लिख डालेंगे; क्योंकि वे एक से एक ज्यादा अक्लवाले होंगे!

वह साहिब बड़ा है, उसकी नाम महिमा बड़ी है, इसलिए उसकी कोई मिसाल नहीं। उसीका किया सब-कुछ होता है। नानक एक बात कहते हैं, कि जो अपने को कुछ मानता है कि मैं ज्ञानी हूँ, उसकी आज भले ही दुनिया में तत्त्वज्ञानी के नाम पर शोभा हो, लेकिन आगे जाकर उसकी शोभा नहीं होगी। इसलिए हम कुछ नहीं हैं, परमेश्वर ही सृष्टि को जानता है, ऐसा समझकर, परमेश्वर के चिंतन में लगना चाहिए। सृष्टि के चिंतन में नहीं लगना चाहिए।

२२

"पाताला पाताल लख, आगासा आगास।
ओड़क ओड़क भालि थके, वेद कहनि इक वात।
सहस अठारह कहनि कतेबा, असुलू इकु धातु।
लेखा होइ त लिखीऐ लेखै होइ विणासु।
नानक वडा आखीऐ आपे जाणै आपु॥" २२

एक पाताल के नीचे दूसरा पाताल, और उसके नीचे और एक पाताल, पता नहीं, कितने लाख-लाख पाताल हैं। एक आकाश के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऊपर दूसरा आकाश, उसके ऊपर और आकाश, पता नहीं कितने हैं। इसका अन्त देखने की कोशिश में खोजते-खोजते वेद थक गये, अन्त-अन्त कहते ही रह गये। विज्ञान बताता है कि नक्षत्रादि कितने बड़े हैं, बड़ी चीजें कितनी बड़ी हैं, इसका कोई अंत नहीं है। छोटी चीजों का भी अंत नहीं है। वेद एक ही बात कहते हैं, कि सर्वत्र एक ही ब्रह्म भरा है। या एक ही बात कहते हैं, कि इसका अन्त नहीं है। सृष्टि अनन्त है। श्रुति कहती है : **'नेति नेति आत्मा', 'सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म'**। यहाँ 'कतेबा' कहा है, तो नानकजी के ध्यान में मुस्लिम किताबें भी होंगी। किताबें कहती हैं कि अठारह हजार ब्रह्मांड हैं, लेकिन मूल धातु एक ही है। अगर उसका कोई अन्दाजा (लेखा), शुमार, होता तो लिख भी सकते, लेकिन हिसाब है कहाँ ? लिखते-लिखते लिखने का ही खात्मा हो जाता है। नानक कहते हैं, इसका सार इतना ही है, कि भगवान् बड़ा है, ऐसा कहो। **'अल्लाहु अकबर'**। वह महादेव सबसे श्रेष्ठ देव है। वह खुद अपने को जानता है।

२३

"सालाही सालाहि, एती सुरति न पाईआ।
नदीआ अतै वाह पवहि समुंदि न जाणीअहि।
समुंद साह सुलतान गिरहा सेती मालु धनु।
कीड़ी तुलि न होवनी जे तिसु मनहु न वीसरहि ॥" २३

परमात्मा, जो कि 'सालाह' यानी स्तुति के योग्य है, उसकी स्तुति लोग करते हैं, लेकिन उसका जरा भी रहस्य किसीने नहीं पाया। वर्णन करनेवाले परमात्मा का खूब वर्णन करते हैं, या वर्णनीय परमात्मा का वर्णन करते हैं। सराहनीय, श्लाघ्य, ईड्यम्, स्तवनीय, परमेश्वर का लोग स्तवन करते हैं, लेकिन किसीको भी उसकी पहचान नहीं हुई, उसका अन्दाजा नहीं लगा। इतना ही नहीं,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लेकिन वर्णन करते-करते अपनी स्मृति तक भूल गये। अनेक नदियाँ, नाले, प्रवाह, समुन्दर में जाकर डूब सकते हैं, लेकिन अन्त नहीं पा सकते। वे समुद्र को जान नहीं सकते। यहाँ एक छोटी-सी सुन्दर मिसाल के जरिये, बहुत बड़ी बात कही है। नदियाँ समुद्र में जाकर लीन हो सकती हैं, लेकिन उसे जान नहीं सकतीं। उसे जानने के लिए उससे बड़ा होना होगा। उसे दृश्य बनाकर हम द्रष्टा बनें, यह असम्भव है। इसलिए भगवान् को जानना असम्भव है। परन्तु भगवान् की प्राप्ति सम्भव है। हम भगवान् में डूब सकते हैं, और उसे प्राप्त कर सकते हैं, उसका मजा चख सकते हैं, उसमें गोता लगा सकते हैं, अपने को उसमें लीन, खत्म, कर सकते हैं। उसमें प्रवेश शक्य है, लेकिन उसका ज्ञान अशक्य है। उसका ज्ञान, उसकी पहचान, गिनती, शुमार, ये सारे हमारी बुद्धि से परे हैं। पहचान, गिनती, शुमार, ये सारी बातें बुद्धि से होती हैं। उसकी प्राप्ति यानी ज्योति में ज्योति मिल जाना। भक्ति से उसकी प्राप्ति होती है। गीता में कहा है कि भक्ति से उसका ज्ञान हो सकता है, यानी भक्ति से उसको चखना सम्भव है। तुकाराम (महाराष्ट्र के सन्त) ने कहा है :

मनवाचातीत तुझें हें स्वरूप।
म्हणोनिबां माप भक्ति केलें।
भक्तीचिया मापें मोजितों अनंता।
इतराने तत्त्वतां न मोजवे।

और गीता में कहा है :

भक्त्या मां अभिजानाति
यावान् यश्चास्मि तत्त्वतः –गीता १८.५५

वास्तव में यह स्वरूप, मन-वाणी, से परे है। मन से उसका

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मनन नहीं हो सकता, वाणी से प्रकाशन नहीं हो सकता। इसलिए तुकाराम कहता है कि, परमेश्वर को नापने के लिए भक्ति का नाप बनाया : **'म्हणोनियां माप भक्ति केलें।'** परमात्मा बौद्धिक नाप-तौल से नहीं नापा जा सकता। परमात्मा अनंत है। उसका अंत नहीं। लेकिन उस अनंत को मैं भक्ति से नाप लेता हूँ। और भक्ति की भाषा में उसका वर्णन करता हूँ। कहता हूँ, कि परमात्मा शालिग्राम है। परमात्मा का ज्ञान असंभव है, लेकिन भावार्थ से उसे चखना संभव है। रामकृष्ण परमहंस ने कहा है, कि पेड़ पर आम है, उनकी गिनती करने की क्या जरूरत है, आम चखने को मिलना चाहिए।

महिम्न-स्तोत्र में कहा है कि "मैं भगवान् का स्तोत्र गा रहा हूँ, लेकिन मुझे क्या हक है? तेरी महिमा को न जाननेवाला शख्स तेरी स्तुति न करे, यही उचित माना जायगा, तो ब्रह्मदेव आदि को भी तेरी स्तुति करने का अधिकार नहीं रहेगा। मैं तो छोटा हूँ। परमेश्वर की महिमा का पार नहीं, अंत नहीं है। मैं परमेश्वर को महिमा का अंत नहीं पाता हूँ, इसलिए मैं उसकी स्तुति करने के लिए नालायक साबित होऊँगा, तो ब्रह्मदेव भी नालायक साबित होगा। क्योंकि, वह भी उसका अंत नहीं पाता। अगर यह माना जाय कि कोई अपनी मति के अनुसार वर्णन करे तो मुआफ है। तो मुझे भी मुआफी मिलनी चाहिए, क्योंकि ब्रह्मदेव भी अपनी मति के अनुसार वर्णन करेगा। अतः मुझे भी अपनी मति के अनुसार वर्णन करने का हक है। और मेरा जो भगवान् की स्तुति करने का प्रयत्न है, वह भी बिलकुल निर्दोष माना जायगा।" तुकाराम ने यही कहा है, **'मानवाचातीत तुझें हें स्वरूप।'** 'सालाही सालाहि....' वर्णन करनेवाले खूब वर्णन करेंगे। उन्हें वर्णन करने का हक भी है, उससे वाणी पवित्र होती है। लेकिन उसके अंदर का मर्म क्या है, इसे वे नहीं जान सकते।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सिर्फ नदियाँ ही समुद्र में मिल जाती हैं। ऐसा नहीं, छोटे नाले भी मिलते हैं। बड़े महापुरुष भी भगवान् को प्राप्त कर सकते हैं, और हम छोटे पुरुष भी। छोटा बच्चा भी माँ की गोद में बैठ सकता है, लेकिन वह उसे जान नहीं सकता।

समुद्र पर जिस सुलतान की सत्ता है, वह बहुत बड़ा माना जाता है। जमीन की सत्ता उतनी बड़ी नहीं है। इंग्लैण्ड का यही दावा था कि उसको समुद्र पर सत्ता है। कोई समुद्र पर सत्ता चलानेवाला सुलतान हो, और साथ ही उसके पास पहाड़ जैसा धन और माल हो, लेकिन उसको भगवान् का स्मरण नहीं हुआ, तो भगवान् के दरबार में उसकी कीमत, उस चींटी की बराबरी की भी नहीं होगी, जो भगवान् को मन में नहीं भूलती है।

२४

"अंतु न सिफती कहणि न अंतु।
अंतु न करणै देणि न अंतु।
अंतु न वेखणि सुणणि न अंतु।
अंतु न जापै किआ मनि मंतु।
अंतु न जापै कीता आकारु।
अंतु न जापै पारावारु।
अंत कारणि केते बिललाहि।
ता के अंत न पाए जाहि।
एहु अंतु न जाणै कोइ।
बहुता कहीऐ बहुआ होइ।
वडा साहिबु ऊचा थाउ।
ऊचे उपरि ऊचा नाउ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एवडु ऊचा होवै कोइ।
तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ।
जेवडु आपि जाणै आपि आपि।
नानक नदरी करमी दाति॥" २४

भगवान् की सिफ़तों का, गुणों का, अंत नहीं है। और हमारे कहने का भी अंत नहीं है। या उनके कथन का अंत नहीं, वे सहस्र मुखों से कह ही रहे हैं, जिसका अंत नहीं है। अलावा इसके, वे सत्पुरुषों के मुख से भी कहते जाते हैं। उनकी कृति बेशुमार है, उसका अंत नहीं है। उनकी देनों का अंत नहीं है। उनके 'वेखणि' का, और 'सुणणि' का अंत नहीं है। यानो वे द्रष्टा रूप में खूब देखते ही रहते हैं, सुनते ही रहते हैं। **'द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः।'** वे मन में क्या मनन करते हैं, उसका कोई अंत नहीं है। वह जाना नहीं जायगा। उन्होंने कितना आकार किया, इसका अंत नहीं दीखता। इस पार का, उस पार का, कोई किनारा नहीं आ सकता। उसके अंत की प्राप्ति के लिए परमेश्वर के स्वरूप का अंत मालूम हो जाय, उसका रहस्य मालूम हो जाय, इसलिए कितने ही लोगों ने कोशिश की है। कितने ही उसके लिए व्याकुल हो गये हैं, फिर भी उसका अंत नहीं पाया जाता। उसका नाम ही अनत है। कौन उसका अंत जानेगा? हम उसके स्वरूप का वर्णन करने का प्रयत्न करते हैं, बहुत कहते हैं, तो भी कहने को बहुत ज्यादा रह जाता है—साध्य हमेशा आगे बढ़ जाता है। हम उसके नजदीक पहुँचते हैं, तो वह और आगे बढ़ जाता है। शास्त्रों में ऐसा ही कहा है, कि उसका अंत नहीं आयेगा, क्योंकि जितना हम उसकी कल्पना को बढ़ाते चले जायेंगे, उतना और ऊपर-ऊपर का दीखेगा।

वह बड़ा साहिब है। उसका बहुत ऊँचा स्थान है। लेकिन उस ऊँचे स्थान से भी, उसका नाम और ऊँचा है। उसके स्थान

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

की ऊँचाई से, नाम की ऊँचाई ज्यादा है। नाम, रूप से, बड़ा है, यह तुलसीदास ने रामायण में बहुत सुन्दर कहा है : **'कहउँ नामु बड़ राम तें निज बिचार अनुसार।'** नामदेव ने और एक बात कही है कि "उनका नाम सुन्दर है, रूप सुन्दर है, लेकिन उनका प्रेम, और अधिक सुन्दर है। उनके नाम और रूप से भी उनका प्रेम बड़ा है।" इतना ऊँचा, बड़ा जो कोई होगा, वही उस ऊँचे का स्वरूप जान सकेगा। इसलिए वह कितना बड़ा है, यह आप ही आप जानता है, वही खुद जानता है। 'नदरी' और 'करमी', ये दोनों शब्द भगवान् की प्रसन्नता के सूचक हैं (नदर यानी नजर और करम यानी औदार्य)। नानक कहते हैं, कि भगवान् की कृपा होती है, और उदारता होती है, तब वह देन मिलेगी। अपना कृति से हम कुछ पानेवाले नहीं हैं। इसलिए उतना ही ज्ञान हमें मिलेगा, जितनी उनकी कृपा होगी। हम अपनी स्वतंत्र बुद्धि से ज्ञान हासिल नहीं कर सकते। इसीलिए उनकी कृपादृष्टि चाहिए। भगवद्गीता के ग्यारहवें अध्याय में, भगवान् ने, अर्जुन को दिव्य-दृष्टि का दान दिया है। साधारण दृष्टि से विश्वरूप नहीं देखा जा सकता, उसके लिए, दिव्यदृष्टि चाहिए। लेकिन दिव्यदृष्टि देने पर भी, विश्वरूप अनंत है, ऐसा ही अर्जुन को लगा। ज्ञानेश्वर ने कहा है, कि सामान्य दृष्टि को उतना भी नहीं मालूम होता, लेकिन दिव्यदृष्टि को स्वच्छ ज्ञान होता है, कि वह अनंत है।

२५

'बहुता करमु लिखिआ ना जाइ।
वडा दाता तिलु न तमाइ।
केते मंगहि जोध अपार।
केतिआ गणत नही वीचारु।
केते खपि तुटहि वेकार।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

केते लै लै मुकरु पाहि।
केते मूरख खाही खाहि।
केतिआ दूख भूख सद मार।
एहि भि दाति तेरी दातार।
बंदिखलासी भाणै होइ।
होरु आखि न सकै कोइ।
जे को खाइकु आखणि पाइ।
ओहु जाणै जेतीआ मुहि खाइ।
आपे जाणै आपे देइ।
आखहि सि भि केई केइ।
जिसनो बखसे सिफति सालाह।
नानक पातिसाही पातिसाहु" ॥ २५

भगवान् की महत्ता का कोई नाप नहीं है। जितना उनका विशाल रूप है, उससे भी ऊँचा नाप है। वह कितना बड़ा है, वे स्वयं जानते हैं। नानक कहते हैं कि उनकी नजर जिस पर उतरेगी, उसीको वह दान मिलेगा। वही परमेश्वर के पास पहुँचेगा। परमेश्वर का दातृत्व (करमु) बहुत ही है। उसका मूल्यांकन नहीं हो सकता। तुकाराम ने वर्णन किया है कि—

तुज ऐसा कोणी न देखे उदार। अभयदानशूर पांडुरंगा।

'हे भगवन्, तेरे जैसा उदार कोई नहीं है। और दूसरे तो होते हैं दानशूर, लेकिन तू अभयदानशूर है।' वह महान् दाता है। और देता है तो लेने की तिलभर भी अपेक्षा नहीं करता। वह निष्काम दाता है। भगवान् ने गीता में साधक के लिए निष्काम कर्मयोग का वर्णन किया है। लेकिन यहाँ कहा है, कि भगवान् के देने में कोई कामना नहीं है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दुनिया में भगवान् का इतना दातृत्व रहते हुए भी, कितने ही योद्धा हैं, जो उसके पास माँगते ही रहते हैं, जिनकी कोई गिनती नहीं। जो आध्यात्मिक वीर पुरुष होते हैं, वे भगवान् से माँगते हैं, दुनिया से नहीं माँगते हैं। भगवान् के ऐसे याचकों की कितनी तादाद है, उसका विचार नहीं हो सकता। लेकिन कुछ ऐसे भी पड़े हैं, जो भगवान् के पास माँगने के बजाय अपने इंद्रिय-भोग में पड़कर, क्षीण होकर, टूट पड़ते हैं, बेकार बनते हैं। कुछ लोग ऐसे हैं, जो ले-लेकर भी मुकर जाते हैं, यानी कुछ भी नहीं मिला, ऐसा कहते हैं। यानी कृतघ्न हैं। कितने मूरख ऐसे हैं, जो खाते ही चले जाते हैं, और पहचानते नहीं कि भगवान् से मिला है। कितने ही ऐसे हैं, जिन्हें दुःख, भूख, की सदा मार पड़ती है, लेकिन वे समझते हैं कि भगवान् की हम पर बड़ी कृपा है। 'हे दातार! यह भी दान तुमने ही दिया है, तेरी बड़ी देन हमें मिल रही है', ऐसा कहते हैं। वे ऐसे कृतज्ञ, वैराग्यसम्पन्न, भक्त होते हैं, जो दुःखभोग में भी भगवान् का उपकार मानते हैं।

हे भगवन्, तुम्हारी इच्छा से (भाणै), बंधन से मुक्ति, (खलासी) छुटकारा मिलता है। मुक्ति का इससे भिन्न साधन कोई नहीं कह सकते। **'ऋते ज्ञानात् न मुक्तिः'** ज्ञान के सिवा मुक्ति नहीं। ऐसा अद्वैत-पंथ कहता है। परन्तु भक्ति-पंथ दूसरी बात कहता है। 'ईसा की कृपा (ग्रेस) के सिवा मुक्ति नहीं', ऐसा ईसाई-पंथ कहता है। 'परमेश्वर की कृपा के सिवा मुक्ति का दूसरा कोई रास्ता नहीं है', ऐसा भक्तिपंथ कहता है। दोनों में विरोध नहीं। क्योंकि परमेश्वर की कृपा से ज्ञान होगा और उससे मुक्ति मिलेगी, ऐसा दोनों का समन्वय हो सकता है। कोई मूरख (खाइकु) कहने लगे कि भक्ति का दूसरा रास्ता है, तो उसे कितने थप्पड़ खाने पड़ेंगे, यह वही अनुभव करेगा। और फिर वैसा कहने की धृष्टता नहीं करेगा। यानी परमेश्वर की कृपा के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सिवा, कोई आत्मावलंबी साधन, ढूंढेगा, तो उसे अहंकार में पड़कर मार खानी पड़ेगी। भगवद्गीता में कहा है कि 'अव्यक्तोपासना' बहुत क्लेशकारक है। भगवान् खुद (आपे) ही भक्त की गरज जानता है, और आप ही उसे देता है। लेकिन यह कहनेवाले भी थोड़े ही निकलते हैं। यानी ऐसा अनुभव जिन्हें आया है, कि भगवान् ने स्वयं हमारा गरज पहचानकर हमें दिया, यह कह सकनेवाले भी कम हैं। वास्तव में वही अनुभव सही है। लेकिन वह कम लोगों को आता है। तमिल संत माणिक्यवाचकर ने कहा है, कि भगवान् स्वयं आये और मेरे हृदय में प्रवेश करके उन्होंने मुझे भक्त बनाया। वैसे जिन्हें भक्तिदान मिला, वे भी थोड़े ही हैं। लेकिन जिन्हें मुक्तिदान मिला, वे और थोड़े हैं। दूसरा अर्थ यह होगा, कि दूसरे-तीसरे कविता करनेवाले मिलते हैं, लेकिन भगवान् का यह वैभव गानेवाले, कम ही मिलते हैं। भगवान् ने कृपा करके जिन्हें भगवद्गुणगान का गुण दिया है, सालाह की सिफत दी है, नानक कहते हैं कि वे लोग बादशाह के भी बादशाह हुए। यह बहुत बड़ी देन है। वह जिसको मिलती है, उसकी वाणी को यही प्रेरणा मिलती है कि सतत भगवान् के गुण गाये।

इस पौड़ी में परमेश्वर के दातृत्व का वर्णन है। मुक्ति भी भगवान् ही देते हैं, इतना उनका दातृत्व अपार है। लेकिन उनकी सबसे बड़ी देन है, किसीको भगवद्भक्ति की प्रेरणा देना।

२६

**"अमुल गुण अमुल वापार।
अमुल वापारीए अमुल भंडार।
अमुल आवहि अमुल लै जाहि।
अमुल भाइ अमुला समाहि।**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अमुलु धरमु अमुलु दीबाणु ।
अमुलु तुलु अमुलु परवाणु ।
अमुलु बखसीस अमुलु नीसाणु ।
अमुलु करमु अमुलु फुरमाणु ।
अमुलो अमुलु आखिआ न जाइ ।
आखि आखि रहे लिवलाइ ।
आखहि वेद पाठ पुराण ।
आखहि पड़े करहि वखिआण ।
आखहि बरमे आखहि इंद ।
आखहि गोपी तै गोविंद ।
आखहि ईसर आखहि सिध ।
आखहि केते कीते बुध ।
आखहि दानव आखहि देव ।
आखहि सुरि नर मुनि जन सेव ।
केते आखहि आखणि पाहि ।
केते कहि कहि उठि उठि जाहि ।
एते कीते होरि करेहि ।
ता आखि न सकहि केई केइ ।
जेवडु भावै तेवडु होइ ।
नानक जाणै साचा सोइ ।
जे को आखै बोलु विगाड़ु ।
ता लिखीऐ सिरि गावारा गावारु ॥" २६

इस पौड़ी में परमेश्वर के गुणों का वर्णन है ।

परमेश्वर के गुण अमूल्य हैं । उन गुणों की पूँजी लेकर, उनका जो व्यापार चलता है, वह भी अमूल्य है, वह व्यापारी भी अमूल्य है । और उसके पास जो तरह-तरह का माल है, गुणरूपी भंडार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है, वह भी अमूल्य है। इस संसार में सेवाकार्य, धर्मकार्य, करने के लिए अनेक आते हैं, वे भी अमूल्य हैं। जो भगवान् का काम करने के लिए इस दुनिया में आते हैं, भगवान् का व्यापार उनके जरिये चलता है। और जो ले जानेवाले हैं, जो यहाँ से अनंत गुण लेकर जाते हैं, वे भी अमूल्य हैं। उनमें जो भगवान् पर प्यार करने वाले हैं, वे अमूल्य हैं। आखिर जो भगवान् में समा जाते हैं, वे अमूल्य हैं। इस तरह आनेवाले साधक, ले जानेवाले ज्ञानी, प्रेम करनेवाले भक्त और भगवान् में समा जानेवाले मुक्त, सब अमूल्य हैं।

भगवान् का धर्म अमूल्य है। 'दीबाण' यानी दरबार। भगवान् के जिस दरबार में धर्म-चर्चा चलती है, और कर्म के अनुसार फैसला दिया जाता है, वह अद्भुत है। उसमें जो तौल करनेवाला है, उसके पास जो तराजू और बाट हैं, वे अमूल्य हैं। भगवान् जिस कसौटी पर जीवों को कसते हैं, वह साधारण नहीं है। भगवान् केवल ऊपर का काम नहीं देखते। किसकी कितनी अंतःशुद्धि है, यह देखते हैं। इसलिए भगवान् के बाट और तराजू अमूल्य हैं। व्यावहारिक भाषा में उनकी तुलना नहीं हो सकती। उनका 'बखसीस' यानी मुआफ करना अमूल्य है। और उन्होंने मुआफ किया, इसका 'नीसाण' यानी चिह्न भी अमूल्य है। 'करमु' यानी उदारता। उनका पाप को मुआफ करना, और पुण्य के लिए इनाम देना, दोनों अमूल्य हैं। उनका 'फुरमाण' यानी हुक्म, अमूल्य है। न्यायाधीश फैसला देता है, तो उस पर अमल कराने का आयोजन भी है। इसलिए वह फैसला अमूल्य है।

उनका सब अमूल्य ही अमूल्य है। उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। यह चीज 'जपुजी' में बार-बार आती है। तुलसीदास भी वर्णन करते हैं और फिर '**कछु बरनि न जाई**'—वर्णन नहीं हो सकता, ऐसा कहते हैं। अकसर कवि इस तरह नहीं कहते हैं। लेकिन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तुलसीदास जिस स्तर पर सोचते हैं, वह सामान्य साहित्य का स्तर नहीं है, दूसरा ही स्तर है। इसलिए वहाँ वाणी रुक-रुककर प्रकट होती है। वहाँ जैसे उसका वर्णन जरूरी है, वैसे उसका रुकना भी जरूरी है। कह-कहकर आखिर जो कहनेवाले थे, वे 'लिव लाइ' यानी मौन हो गये, समाधिस्थ हो गये। वेद-संहिता, पदपाठ, पुराण, ये सारे भगवान् का वर्णन करने का प्रयत्न करते हैं, और 'पढ़े' यानी विद्वान् भी उसका वर्णन करके, उस पर लंबे-चौड़े व्याख्यान देते हैं। तरह-तरह के जो भाष्य लिखे जाते हैं, वे सब भगवान् के वर्णन के प्रयत्न हैं।

भगवान् के गुणों की, उनके दातृत्व की महिमा, इत्यादि के वर्णन में, कौन-कौन लगे हैं? ब्रह्मदेव, इंद्र, गोपी, गोविन्द, ये जो विविध आदर्श माने जाते हैं, वे सारे उनके वर्णन में लगे हैं। 'गोविन्द' नाम भगवान् का है, ऐसा हिन्दुओं ने और सिखों ने भा माना है। लेकिन यहाँ वह गोविन्द नहीं है। यहाँ तो भगवान् का गुण गानेवाला गोविन्द है, जो सगुण साकार अवताररूपेण प्रसिद्ध है। भगवान् तो सगुण निराकार है। उससे भी परे निर्गुण निराकार ब्रह्म की जो कल्पना की जाती है, उसकी यहाँ अपेक्षा ही नहीं है। 'बरमे ईद' कहकर उपनिषदों का सूचन किया है, [ब्रह्मदेव (प्रजापति), और इन्द्र का उल्लेख गुरु-शिष्य के रूप में छान्दोग्य में आया है।] और 'गोपी गोविन्द' कहकर भागवत का। 'ईसर' यानी शंकर भी उनके वर्णन में लगे हैं और सिद्ध पुरुष भी। हम एक गौतम बुद्ध को जानते हैं। लेकिन भगवान् ने कितने बुद्ध पैदा किये, हम नहीं जानते। वे सब अपने-अपने ढंग से भगवद्वर्णन में मग्न हैं (चाहे भगवान् का नाम न भी लेते हों)। यहाँ पर 'ईसर' यानी शैव संप्रदाय, 'सिध' यानी जैन, और 'बुद्ध' यानी बौद्ध, का उल्लेख है। शैवों ने भगवान् के वर्णन में अनेक भजन बनाये हैं। इस तरह संहिता, पदपाठ, पुराण, भाष्य,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उपनिषद् भागवत, शैव, बौद्ध, जैन, ये सारे भगवान् का वर्णन करने में लगे हैं।

अब उपसंहार में, जो बचे हुए हैं, वे भी भगवान् का वर्णन करते हैं, ऐसा कहा है। दानव और देव, दोनों उसका वर्णन करते हैं। दानवों को भगवान् के वर्णन का मौका इसलिए मिलता है, कि भगवान् उनका निग्रह करते हैं, और देवों को इसलिए कि वे देवों पर अनुग्रह करते हैं। इस तरह भगवान् निग्रहकारी और अनुग्रहकारी हैं। सुर, नर, मुनि और सेवकजन, ये सारे भगवान् का वर्णन करते हैं। 'देव' के बाद 'सुर' शब्द आया है, तो मैं मानता हूँ कि यहाँ सुर, नर, मुनि, ये सारे साधकों के प्रकार माने गये हैं। **'सुणिऐ सिध पीर सुरि नाथ'**—में भी 'सुर' शब्द साधक के रूप में आया है। 'जन' यानी सामान्य जन, 'नर' यानी विशेष मनुष्य।

'केते आखहि आखणि पाहि'—कितने ही ऐसे हैं, जो भगवान् का वर्णन आज कर रहे हैं और जो नहीं भी कर सकते, वे कोशिश तो करते ही हैं। कितने ही ऐसे हैं, जो भगवान् का वर्णन कर-करके उठ-उठकर चले गये। भगवत्संकल्प से और कितने ही ऐसे पैदा किये जायेंगे, जो भगवान् का वर्णन करते रहेंगे। यानी आगे आनेवाली पीढ़ी के लोग उनका वर्णन करेंगे। इस तरह यहाँ तीन पीढ़ियों का वर्णन है। जीवों का यह सिलसिला, जो कि भगवान् का वर्णन करेगा, कितना लंबा चलेगा, कह नहीं सकते। क्योंकि वह जितना बड़ा होना चाहे, हो सकता है। नानक कहते हैं, कि सचमुच में उसका क्या रूप है, यह वही जानता है। अगर कोई बोल बिगाड़नेवाला, यानी शब्दों को बिगाड़नेवाला 'साहित्यिक' निकल जाय, तो वह गँवारों के सिर पर गँवार लिखा जायगा, वह मूर्खों का सरदार, परममूर्ख होगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

२७

"सो दरु केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले।
वाजे नाद अनेक असंखा केते वावणहारे।
केते राग परी सिउ कहीअनि केते गावणहारे।
गावहि तुहनो पउणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे।
गावहि चितु गुपतु लिखि जाणहि लिखि लिखि धरमु वीचारे।
गावहि ईसरु बरमा देवी सोहनि सदा सवारे।
गावहि इंद इदासणि बैठे देवतिआ दरि नाले।
गावहि सिध समाधी अंदरि गावनि साध विचारे।
गावनि जती सती संतोखी गावहि वीर करारे।
गावनि पंडित पड़नि रखीसर जुगु जुगु वेदा नाले।
गावहि मोहणीआ मनु मोहनि सुरगा मछ पइआले।
गावनि रतन उपाए तेरे अठसठि तीरथ नाले।
गावहि जोध महाबल सूरा गावहि खाणी चारे।
गावहि खंड मंडल वरभंडा करि करि रखे धारे।
सेई तुधुनो गावहि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले।
होरि केते गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ वीचारे।
सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई।
है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई।
रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई।
करि करि वेखै कीता आपणा जिव तिस दी वडिआई।
जो तिसु भावै सोई करसी हुकमु न करणा जाई।
सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु नानक रहणु रजाई" ॥ २७

यह बहुत प्यारी पौड़ी है। एक स्वतन्त्र पौड़ी के तौर पर इसका समावेश और भी जगह किया गया है। 'जपुजी' प्रातः काल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पढ़ा जाता है, और शाम को 'रैदास' बोला जाता है। उसमें भी यह पौड़ी आती है। भगवान् का गुणगान करनेवाली, भगवान् के दरबार का वर्णन करनेवाली, यह अद्भुत पौड़ी है।

वह तुम्हारा दरबार और तुम्हारा घर कैसा है, जहाँ बैठकर तुम सारी दुनियाँ को सँभाल रहे हो? भगवान् का एक दरबार है, जहाँ वे बैठे हैं। सबकी देख-रेख करते हैं, और सब उनका स्तवन कर रहे हैं। वहाँ तरह-तरह के बाजे, असंख्य नाद हैं, या तरह-तरह के असंख्य नाद बज रहे हैं। और बजानेवाले भी कितने ही हैं। नाद के मानी है 'अंतर्नाद'। प्रभु के दरबार में बैठकर कितने ही बजानेवाले बजा रहे हैं, और उसमें से अनेक प्रकार के नाद निकल रहे हैं। कितने ही गानेवाले, कितनी ही राग-रागिनियों के साथ गा रहे हैं। वायु, पानी, अग्नि, ये सब तुम्हारे दरबार में बैठकर तुम्हारा गायन कर रहे हैं। द्वार पर धर्मराज गा रहे हैं और चित्रगुप्त जो सबका भला-बुरा लिखना जानते हैं, वे आपके दरबार में बैठकर इधर लिखते जाते हैं, और उधर गा भी रहे हैं। लिखते हुए धर्म-निर्णय करने की जिम्मेवारी भी शायद उन्हीं पर है। यानी, वहाँ गायन करनेवाले, बेकार लोग नहीं हैं। जिनको दूसरे काम सौंपे हैं, वे अपना काम पूरा करके गाते हैं। खालिस गाने के लिए कोई रखे हुए नहीं हैं। शंकर, ब्रह्मदेव, देवी, सब वहाँ गा रहे हैं, जो तेरे ही सजाये हुए शोभित हैं। इंद्र अपने इंद्रासन पर बैठकर, अनेक देवताओं के दल के साथ गा रहे हैं।

प्रथम तो सारी सृष्टि के कार्य करनेवाले, पवन, पानी, चित्रगुप्त, आदि, और फिर, इंद्र आदि, गा रहे हैं, यह कहा। अब साधक और सिद्ध, अपने चिन्तन और समाधि के अन्दर गा रहे हैं, यह कहते हैं। उनका, अंतर्गायन, गुप्त गायन, चल रहा है। वे विचारपूर्वक गाते हैं। 'जतो' यानी संयमशील। 'सती'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यानी सत्य का प्रयोग करनेवाले। 'संतोषी' यानी समाधानी। 'करारे वीर' यानी निश्चयवाले शूर पुरुष। ये सब गा रहे हैं।

पढ़नेवाले बड़े-बड़े पंडित और ऋषीश्वर, वेदों के साथ युग-युग से गा रहे हैं। स्वर्गलोक, मृत्युलोक और पाताल, तीनों के मन को मोहन करनेवाली गोपियाँ गा रही हैं। तेरे पैदा किये हुए जो रतन हैं, वे भी गा रहे हैं। अड़सठ तीर्थों के साथ ये लोग गा रहे हैं। कुरान शरीफ में जिक्र आया है, कि सारी सृष्टि 'तसबीह' कर रही है, यानी भगवान् का स्तवन कर रही है। चार 'खानियाँ' यानी चार प्रकार की उत्पत्ति-योनियाँ। वैसे योनियाँ तो असंख्य मानी गयी हैं, लेकिन उनके आधारभूत स्रोत चार हैं। वे चार 'कैटेगरीज' में, खानियों में बँटी हुई हैं। वे चार खानियाँ और महाबलवान् शूर योद्धा, ये सब गा रहे हैं। जो तूने बनाये और टिकाकर रखे हैं, वे सारे खंड, प्रदेश, सारे ब्रह्माण्ड, गा रहे हैं। जिन पर तेरी प्रीति है, जो तुझे पसन्द हैं, वे तेरे रसमग्न, रसिक भक्त, तेरा गायन कर रहे हैं। और भी कितने गा रहे हैं, वे मेरे चित्त में नहीं आते हैं। मैं उनकी गिनती नहीं कर सकता। नानक अपनी अल्पबुद्धि से क्या विचार करेगा ?

वही निरंतर सत्यस्वरूप एकरस ('सोई सोई') है, एक वही सत्यस्वामी है। उसका नाम सत्य है, सत्य ही उसकी महिमा है। वह है भी, होगा भी, कभी गया नहीं, न कभी जायगा, या कभी जनमा नहीं, न जन्मेगा। जिसने यह सारी रचना बनायी है, वह कभी जानेवाला नहीं है, न आनेवाला है। वह आज भी है, आगे भी है। रंग-रंग की, तरह-तरह की 'जिनसी माइआ' यानी जिसमें अनेक 'जिनस' (वस्तु) भरी हैं, ऐसी माया जिसने बनायी, वह अपना बनाया हुआ विश्व बना-बनाकर ('करि-करि') देखता है। जैसी कि उसकी बड़ाई, महिमा है, तदनुसार वह देखता रहता है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

('वेखै')। वह तटस्थ रूप से, साक्षी रूप से, सँभाल करता है। जो उसको पसंद आयेगा, वही करेगा। उस पर किसीका हुक्म नहीं चलेगा। वह सर्वेश्वर बादशाहों का बादशाह है। नानक कहते हैं कि उसकी 'रजाई' से यानी उसकी मर्जी के मुताबिक, सबको चलना है।

यहाँ पर जिस भगवान् का वर्णन किया है, वह निर्गुण नहीं है, बल्कि वह सबको पैदा करनेवाला, सबकी सँभाल करनेवाला सगुण है। वह साकार नहीं है। आकार उसीका बनाया हुआ है। शैवों ने शंकर को सर्वश्रेष्ठ माना है, तो वैष्णवों ने विष्णु को। यहाँ पर एक निराकार, सगुण परमेश्वर का वर्णन है। उसके दरबार में भिन्न-भिन्न देवता गा रहे हैं, जिनका गौण स्थान है। ये सारे नाम हिन्दू-धर्म के हैं। परन्तु वैष्णवों ने और शैवों ने जिस देवता को माना है, वह भी एकांगी नहीं है। जैसे संहार-कलारूप शिव भगवान् को ही पूर्ण माना गया है। कुछ लोगों का जो खयाल है कि इसमें ईश्वर के एक ही अंश के साथ चिपके रहने की बात है, वह गलत है। जिन्होंने शंकर, राम या कृष्ण को परिपूर्ण माना, वे एक ही अंश के साथ चिपके हुए नहीं हैं, बल्कि जिस प्रकार से नानक यहाँ पर लिखते हैं, वैसा ही वे भी लिखते हैं। वैसे रामचन्द्र विष्णु का अवतार माने गये हैं। लेकिन तुलसी-दासजी ने लिखा है: **'हरिहि हरिता, विधिहि विधिता, शिवहि शिवता जो दई। वो राम करुणामयी।'** मेरे राम अत्यन्त करुणा-मय हैं; जिन्होंने ब्रह्मदेव को ब्रह्मदेवपन दिया है, विधि को विधि बनाया है, हरि को हरि बनाया है, शिव को शिव बनाया है। यहाँ राम वे हैं, जिनका एक अंश विधि है, दूसरा अंश हरि, और तीसरा शिव है। ऐसे पूर्ण का, अंशी का नाम, 'राम' रखा है। क्योंकि तुलसीदासजी का वह प्रिय नाम है। लेकिन उस राम का स्वरूप परमेश्वर का ही है। माणिक्यवाचकर (दक्षिण के महान् संत)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शंकर के उपासक हैं। वैसे शिव भगवान् तो संहार-कलावाले माने जाते हैं। ब्रह्मदेव उत्पत्ति-कला के, और विष्णु पालन-कला के, देवता माने जाते हैं। लेकिन माणिक्यवाचकर कहते हैं, कि वे तीनों देवता जिसको नहीं जानते, वह आनंदमूर्ति मेरे शिव हैं। महाराष्ट्र के संत रामदास, राम के भक्त थे। उन्होंने लिखा है :

"तिन्ही लोक जेथून निर्माण झाले।
तया देवरायास कोणी न बोले।
विधी निर्मितो लीहितो सर्व भाळीं।
परी लीहिता कोण त्याचे कपाळीं।
हरू जाळितो लोक संहारकाळी।
परी शेवटीं शंकरा कोण जाळी।"

जहाँ से तीनों लोक पैदा हुए, उस भगवान् की तो कोई बात नहीं करता। विधि सबके ललाट पर नसीब का लेख लिखता है, लेकिन विधि के ललाट पर लिखनेवाला कौन है ? संहार-काल में शंकर भगवान् सबको भस्म करते हैं, लेकिन शंकर को भस्म करनेवाला कौन है ? इसलिए यह मानने की जरूरत नहीं, कि ये सारे भक्त, ईश्वर के एक-एक अंश के साथ चिपके हुए हैं; बल्कि हरएक ने, ईश्वर को एक-एक नाम दिया, जो उसका अपना प्रिय नाम था। इसलिए जो नाम-वर्णन वे करते हैं, उनमें और नानक में कोई फर्क नहीं है। परन्तु वे प्रतीकात्मक ('सिम्बालिकल') मूर्तियाँ मानते थे, वह वृत्ति नानक में नहीं दीखती। ●

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

४. साधना

'जपुजी' में मूलमंत्र, ३८ पौड़ियाँ, और अंतिम श्लोक, मिलकर कुल चालीस पद्य हैं। प्रथम सात पौड़ियों में पहला विभाग हो गया। उसके बाद की बारह पौड़ियों में दूसरा विभाग, और आठ में तीसरा विभाग हुआ। अब आखिर का, चौथा विभाग आरम्भ होता है। ये विभाग मूल लेखक ने नहीं बनाये हैं। ये मुझे चिंतन करने पर सूझे हैं। प्रथम सात पौड़ियों में भगवान् सत्यस्वरूप हैं, यह कहकर, उनकी भक्ति की तरफ ध्यान खींचा। जिसे हम 'मंगलाचरण' कहते हैं, उसी प्रकार का यह विभाग है। दूसरे विभाग में चार-चार पौड़ियों के तीन परिच्छेद हैं, जिनमें श्रवण, मनन, और निदिध्यास की महिमा बतायी है। तीसरे विभाग में भगवान् के स्वरूप का चिंतन किया है, जिसका निष्कर्ष यह है, कि भगवान् की महिमा बड़ी है, उनका दरबार बड़ा है। उनका स्वरूप, उनकी शक्तियाँ, आदि का आकलन, हमारी बुद्धि से परे है। हम उनका नाम लें, उनकी शरण में जायँ, उनमें लीन हो जायँ, यही हम कर सकते हैं, और करना चाहिए।

अब आखिर में साधना का विभाग है। प्रथम चार पौड़ियों में भगवान् को प्रणाम किया गया है। उसके बाद नाम-जप की महिमा बतायी गयी है। और फिर आखिर की कुछ पौड़ियों में साधक की उत्तरोत्तर क्या-क्या भूमिकाएँ होती हैं, उनका वर्णन किया गया है। अक्सर साधक की तीन भूमिकाएँ मानी जाती हैं, कोई चार मानते हैं। योगशास्त्र में सात कही गयी हैं। नानक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मैंने पाँच भूमिकाएँ बतायी हैं। उसके बाद एक पौड़ी में अष्टविध साधन बताये हैं। जैसे योगशास्त्र में अष्टांगयोग, और बुद्ध भगवान् ने अष्टांग-मार्ग बताया है, वैसे ही यहाँ आठ साधन बताकर 'जपुजी' समाप्त किया है। आखिर में उपसंहार का श्लोक है।

साधना-विभाग की भगवत्-प्रणाम की पौड़ियाँ बहुत मधुर हैं। योगियों के साथ अपने मार्ग की तुलना करके आरंभ किया है, और भगवत्-प्रणाम में, एक-एक पौड़ी की समाप्ति की है। योग-साधना, ज्ञान-साधना, आदि अनेक प्रकार की जो साधनाएँ मानी जाती हैं, उनके साथ अपना मेल कैसे बैठता है, यह बताया है।

२८

"मुंदा संतोखु सरमु पतु झोली धिआन की करहि बिभूति।
खिंथा कालु कूआरी काइआ जुगति डंडा परतीति।
आई पंथी सगल जमाती मनि जीतै जगु जीतु।
आदेसु तिसै आदेसु।
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु"॥ २८

योगशास्त्र में योगियों के अभ्यास के लिए अनेक प्रकार की शारीरिक मुद्राएँ बतायी हैं। यहाँ पर कहा है कि सन्तोष ही हमारी मुद्रा है, अथवा मुद्रा यानी काष्ठमुद्रा (कान में पहनने की), ऐसे बाह्य भूषण की हमें जरूरत ही नहीं। सन्तोष ही हमारा भूषण है। योगी भीख माँगने निकलता है, तो उसके पास झोली होती है। हमारी झोली है, 'सरमु पतु' यानी प्रतिष्ठित परिश्रम ('डिग्नीफाइड लेबर')। 'सरमु' मुश्किल शब्द है, क्योंकि उसका संस्कृत में एक अर्थ होता है, और फारसी में दूसरा। अगर दूसरा अर्थ किया जाय, तो कहना होगा कि 'सरमु पतु' यानी प्रतिष्ठित नम्रता ('डिग्नीफाइड ह्यूमिलिटी') ही हमारी झोली है। योगी अपने शरीर को विभूति, खाक, लगाते हैं। ध्यान

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ही हमारी विभूति है। 'खिंथा' यानी कंथा, गुदड़ी। काल ही हमारी गुदड़ी है, क्योंकि काल से सब जीर्ण होता है। योगी जीर्ण गुदड़ी पहनते हैं। योगियों की एक युक्ति ('जुगति') यानी प्राणायामादि साधना, होती है। युक्ति कौन-सी है? काया को, शरीर को, 'कुआरी' रखना, यह है हमारी युक्ति। यानी ब्रह्मचर्य। शरीर पवित्र, निर्दोष, पापमुक्त रखना, यह हमारी 'जुगति' है। योगियों के हाथ में डंडा होता है। 'परतीति' यानी आत्मानुभव हमारा डंडा होगा, जिसके आधार से हम चलेंगे।

हमारा पंथ कौन-सा होगा? 'पंथो' स्त्रीलिंगी शब्द 'जमात' के साथ जोड़ने के लिए बनाया है। योगियों में 'आई' नाम का एक पंथ है। हमारा भी 'आई' पंथ है, यानी जो भी उसमें आये, वह हमारा है। कुल विश्व, पूरा मानव-समाज, यह हमारी जमात है। सकल ही हमारी जमात है। पंथ में दीक्षा होती है। लेकिन हमारे पंथ में तो आप दाखिल हो जाओ, यही उसकी दीक्षा है। ....हमसे पूछा जाता है कि 'सर्वोदय-समाज' में कौन दाखिल हो सकता है? तो हम कहते हैं कि जो चाहता है, वह दाखिल हो सकता है। तुम्हारी इच्छा ही बस है।.....**'मनि जीतै जगु जीतु'** हम दुनिया को जीतने के लिए घूमते हैं, तो हमारा रास्ता यह है, कि मन को जीता जाय। इस तरह नानक ने अपनी साधना की, योगियों के साथ तुलना करके रूपक बनाया है।

'आदेसु' यानी, प्रणाम हैं उस भगवान् को, जो सबके आदि हैं, अनील हैं, यानी नीलवर्णरहित हैं। अक्सर भगवान् को नीलवर्ण, मेघःश्याम माना जाता है। इसीलिए यहाँ वर्णरहित, रूपरहित, भगवान् का वर्णन है। इसका अर्थ निर्मल भी हो सकता है। आदि और अनादि, यानी वे सबके आदि हैं, और उनके कोई आदि नहीं हैं। गीता में कहा है कि 'भक्त मुझे आदि जानते हैं और अनादि जानते हैं—यानी मेरा कोई आदि नहीं है और

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मैं सबका आदि हूँ। **'अनाहति'**—भगवत्-स्वरूप अखंड है। उसमें कहीं क्षति नहीं है। हम सोते हैं, तब भी वह जागता है। जाग्रति में तो जागता ही है। इसलिए हमेशा वह है। युग-युग में वह एक ही वेश धारण किये हुए है। युग बदलता है, लेकिन उसका वेश नहीं बदलता, दुनिया बदलती है, काल बदलता है, लेकिन वह नहीं बदलता। कठोपनिषद् में कहा है : **'स एवाद्य स उ श्वः।'**

'आदेश' का अर्थ संकेत भी हो सकता है। वैसे उपनिषदों में आता है। **'आदि अनीलु……'** इ० भगवान् का संकेत हमारे सामने उपस्थित किया गया है।

२९

"भुगति गिआनु दइआ भंडारणि घटि घटि वाजहि नाद।
आपि नाथु नाथी सभ जा की रिधि सिधि अवरा साद।
संजोगु विजोगु दुइ कार चलावहि लेखे आवहि भाग।
आदेसु तिसै आदेसु।
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु" ॥ २९

प्रणाम की इस दूसरी पौड़ी में भी योग का ही रूपक चला है। योगी भी तो भोजन करते ही हैं। ज्ञान ही हमारा भोजन है। कोई सामान इकट्ठा करके, रसोई बनाकर हमें भोजन देगा, तब हम खायेंगे। दया उसकी भंडारण है। ज्ञानरूपी भोजन दया से बनता है। भोजन के समय संगीत भी हो रहा है। हर एक घट में नाद बज रहा है, एक सितार बज रही है, श्वासोच्छ्वास चल रहा है। उस वीणा का एक सूक्ष्म नाद है, जो केवल कानों से नहीं सुनाई देता। घट-घट में बजनेवाला अंतर्नाद, अंतर्मन से सुनाई देता है।

नाथपंथी परिभाषा का प्रयोग करके नानक कहते हैं, कि भगवान् ही हमारे नाथ हैं। जैसे बैल को नत्थी डालकर नाथा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जाता है, वैसे जिसने ये सब जीव नाथ लिये हैं, वे हमारे 'नाथ' हैं। यहाँ संस्कृत 'नाथ' शब्द का प्राकृत श्लेष किया है। काव्य-दृष्टि से यह बड़ी कुशल रचना है। भगवान् ने सबको नाथ लिया है, इसलिए उसके अन्दर हम आ जाते हैं। हम अपने को नाथ सकते हैं। हमारी सब इन्द्रियाँ नाथी हुई हैं। और भगवान् हमारे नाथ हैं, जिन्होंने सब जीवों को नाथा है। 'साद' यानी स्वाद, चसका। ऋद्धि और सिद्धि, ये जो दो स्वाद हैं, वे दूसरों के ('अवरा') हैं। हमें ये स्वाद नहीं चाहिए। ये 'अवरा' यानी हीन भी हैं। हीनों के लिए हैं। हमें तो भगवान् का ही स्वाद चाहिए। योगमार्ग में ऋद्धि और सिद्धि आती ही हैं।

हमारे शरीर में श्वासोच्छ्वास चल रहा है, सृष्टि में भी प्राणायाम चल रहा है। यह जो सारा कार्य चल रहा है, अन्दर लेना और छोड़ना, पैदा होना और संहार, यह सब होता ही रहता है। दिन गया, रात आयी, यह चलता ही है। ये काम करनेवाले दो मुनीम हैं—संयोग और वियोग। दुनिया में हम इन दो से काम लेते हैं। जिसके 'लेखै' यानी नसीब में, जो होता है, वह आता है। संयोग होगा तो संयोग आयेगा, और वियोग होगा तो वियोग। ....ये कुशल साहित्यिक श्लोक हैं। इन श्लोकों में काव्यस्फूर्ति उत्तरोत्तर बढ़ रही है।

३०

"एका माई जुगति विआई तिनि चेले परवाणु।
इकु संसारी इकु भंडारी इकु लाए दीबाणु।
जिव तिसु भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाणु।
ओहु वेखै ओना नदरि न आवै बहुता एहु विडाणु।
आदेसु तिसै आदेसु।
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु" ॥ ३०

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एक है दुनिया की 'माई' यानी माता, जिसे वेदांत में 'माया' कहते हैं। वह युक्ति से सबका प्रसव करनेवाली माँ है। दुनिया के लिए प्रमाणभूत तीन चेले उसने पैदा किये हैं। एक है संसार करने-वाला, दूसरा भण्डार रखनेवाला, और तीसरा आखिर की (प्रलय की) कचहरी में फैसला करनेवाला, यानी लय करनेवाला। यथा-क्रम ब्रह्मा, विष्णु, और महेश। इसमें परमेश्वर का संयोग नहीं है, इसलिए 'जुगति' है। परमेश्वर के संयोग के बिना माया ही प्रसूत करती है। ऐसी यह अद्भुत प्रसूति है। उस माया में ऐसी शक्ति है, कि वह अपने में से ही तीन गुण पैदा करती है—सत्त्व, रज, तम। इसमें परमेश्वर की मदद की जरूरत नहीं है। परमेश्वर साक्षी, तटस्थ, है। **'जिव तिसु भावै'**—जैसा उसे पसन्द आता है, वैसा वह चलाता है। कभी इच्छा हो जाय, तो भंडारी को काम सौंपता है, कभी संसारी को सौंपता है, तो कभी फैसले की कचहरी में भेजता है। 'फुरमाणु' के दो अर्थ होते हैं, हुक्म या स्फूर्ति। इस तरह दो अर्थ बतानेवाले शब्दों की योजना, 'जपुजी' की बड़ी कुशलता है। उससे अर्थ करने में कठिनता भी होती है। नानक ने ऐसे शब्द इस्तेमाल किये हैं, जो संस्कृत भी माने जा सकते हैं और अरबी-फारसी भी माने जा सकते हैं। **'प्रातः स्मरामि हृदि संस्फुरदात्मतत्त्वम्।'** प्रातःकाल में हृदय में जिसकी स्फूर्ति होती है, उस तत्त्व को हम गाते हैं। इसके अनुसार 'स्फूर्ति' भी अर्थ हो सकता है। जैसी उसकी आज्ञा होगी, वैसा चलेगा, या जो कुछ उसे स्फूर्ति होगी, वैसा चलेगा। मैं दोनों अर्थ करता हूँ। मुझे लगता है कि यहाँ संस्कृत और अरबी दोनों अर्थ लेकर शब्दों की रचना की गयी है। आखिर नानक तो हिन्दू और मुसलमान दोनों को ही जोड़ना चाहते थे। **'सगल जमाती'** कहना चाहते थे।

'ओहु वेखै'—वह सबके सामने खड़ा होकर सबको देखता है, लेकिन उसको कोई नहीं देखता। गीता में कहा है : **'अहं वेद नच**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मां वेत्ति'—'जो भूत आज हैं, कल हुए थे, आगे होनेवाले हैं, उन सबको मैं जानता हूँ, लेकिन मुझे कोई नहीं जानता।' यह बड़े आश्चर्य ('विडाणु') की बात है। गीता में विस्तार करके जो कहा है, वही बात उपनिषदों में सिर्फ दो शब्दों में कही है : **'अदृष्टो द्रष्टा।'** जो स्वयं द्रष्टा है, सबको देखनेवाला है, लेकिन उसको कोई देख नहीं सकता।

३१

"आसणु लोइ लोइ भंडार।
जो किछु पाइआ सु एका वार।
करि करि वेखै सिरजणहारु।
नानक सचे की साची कार।
आदेसु तिसै आदेसु।
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु" ।३१

उसका आसन, उसका रहने का स्थान, और उसका भंडार, लोक-लोक में भरा हुआ है। जो कुछ हासिल हुआ है, सो एक बार हासिल हुआ है, दुबारा हासिल करने की बात नहीं है। एक दफा चाभी दे दी, तो बस चालू ही हुआ। 'सिरजणहारु' यानी सर्जन-हार, सृष्टिकर्ता। वह इधर करता जाता है और उधर देखता जाता है। जैसे चित्रकार चित्र खींचता जाता है, और देखता जाता है। उसका चित्र अभी पूरा नहीं हुआ है, उसकी चित्रकारी जारी है। नानक कहते हैं कि वह सत्य है, उसकी कृति भी सत्य है। यह नहीं हो सकता कि वह सत्य हो, और उसकी कृति मिथ्या हो। सच्चे की कृति सच्ची ही हो सकती है।

भगवत्-प्रणाम की चार पौड़ियाँ काव्यश्लेषमय हैं। **'सचे की साची कार'** इस सूत्र में एक आध्यात्मिक तत्त्वज्ञान कह दिया है। जब भगवान् सत्यस्वरूप हैं, तो उनकी कृति भी सत्यस्वरूप ही हो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सकती है। यानी भगवान् सत्य है, तो विश्व मिथ्या नहीं हो सकता। शंकराचार्य ने इस विषय की बहुत ही सुन्दर व्याख्या की है। मशहूर है कि शंकराचार्य ने विश्व को मिथ्या कहा था : '**ब्रह्म सत्यं जगन् मिथ्या।**' लेकिन उन्होंने दो श्लोकों में इस पर प्रकाश डाला है।

'सत्यं जगदिति भानं संसृतये स्यात् अपक्वचित्तानाम्।
तस्मादसत्यमेतत् निखिलं प्रतिपादयन्ति निगमान्ताः॥'

अपक्वचित्त, अनुभवशून्य, पुरुषों को यह जगत् सत्य है, उसकी हर चीज कीमतवाली है, ऐसा महसूस होता है। उन्हें इन चीजों का महत्त्व इतना मालूम होता है, कि उनके सामने हम ही गौण हैं, ऐसा लगता है। उन चीजों का उन पर आक्रमण होता है। परिणाम यह होता है, कि वे संसार में इधर-उधर भटकते रहते हैं और आखिर जन्म-मरण के चक्कर में पड़ते हैं। इसलिए निगमान्त यानी वेदान्त ने कहा है, कि यह सब असत्य है। यानी उनको एक ओर से दूसरी ओर खींचने के लिए कहा कि यह सारा आकार ही है, आकार में क्यों पड़ते हो ? उसकी तह में कोई 'सब्स्टेन्स' या सारतत्त्व नहीं है, ऐसा नहीं। लेकिन कान, आँख, आदि इन्द्रियों से, जो ग्रहण होता है, वह आकार ही है, इसलिए उसमें मत पड़ो। लेकिन,

'**परिपक्वमानसानां पुरुषवराणां पुरातनैः सुकृतैः।**
ब्रह्मैव इदं सर्वं जगदिति भूयः प्रबोधयत्येषः॥'

पुरातन सुकृतों से, अनेक जन्मों के पुण्यों के कारण, जिनके चित्त परिपक्व हुए हैं, ऐसे जो पुरुष हैं, उनके लिए श्रुति यह नहीं कहती, कि जगत् असत्य है; बल्कि यह कहती है कि सारा ब्रह्म ही है, ब्रह्म का ही स्वरूप है। यानी '**नानक सचे की साची कार।**' उसी तरह से शंकराचार्य ने समझाया है कि आसक्त पुरुष को वैराग्य की बात सिखाने के लिए, जगत् असत्य है, ऐसा कहा जाता है। लेकिन जो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आसक्त नहीं है, ऐसे वैराग्यसम्पन्न पुरुष को, यथार्थ, सूक्ष्म, दृष्टि का अधिकार है, इसलिए ऐसे पुरुषों से कहा है, कि जगत् ब्रह्म है। इस तरह शंकराचार्य ने कहा है, कि सृष्टि उतनी ही सत्य है, जितना ब्रह्म सत्य है। यह बात परिपक्व पुरुष के लिए है।

३२

"इकदू जीभौ लख होहि लख होवहि लख वीस।
लखु लखु गेड़ा आखीअहि एकु नामु जगदीस।
एतु राहि पति पवड़ीआ चड़ीऐ होइ इकीस।
सुणि गला आकास की कीटा आई रीस।
नानक नदरी पाईऐ कूड़ी कूड़ै ठीस" ॥ ३२

एक जीभ से लाख जीभें हो जायँ, और लाख से बीस लाख हो जायँ, तो हम उन बीस लाख जबानों से, लाख-लाख मर्तबा ('गेड़ा') भगवान् का नाम लेते रहेंगे। 'जगदीस' यह एक ही नाम हम लाख-लाख बार जपते रहेंगे, यही हमारी साधना होगी। मैं इसका 'सामूहिक अर्थ' भी करता हूँ। परमेश्वर का शब्द, वह एक जबान से भी निकला, तो लाख और फिर बीस लाख जबानें उसका उच्चारण करती हैं। इस तरह परमेश्वर का संकल्प सामूहिक संकल्प का रूप लेता है। 'पति' यानी जगत्पति के रूप में परमेश्वर की उपासना करनी है। पति की राह में ये 'पवड़ीआ' हैं। यहाँ 'पवड़ी' शब्द पहली बार आया है। भगवान् की राह में चढ़ने की ये 'पवड़ीआ' यानी सीढ़ियाँ हैं। हम ये 'पवड़ीआ' चढकर परमेश्वर में एकरूप हो जायेंगे।

'सुणि गला आकास की'—यहाँ 'आकास' शब्द ब्रह्म के लिए आया है। जब दुनिया में आकाश की कहानी सुनाई देती है, तब जन्तुओं को भी उत्साह पैदा होता है। जब परमेश्वर का शब्द प्रसृत होता है, तब मनुष्य को ही नहीं, बल्कि जन्तुओं को भी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उत्साह पैदा होता है, ईश्वर-प्राप्ति का। नानक कहते हैं, कि उसकी कृपादृष्टि से ही हम ईश्वर को पा सकते हैं, बाकी सारी बातें मिथ्या-वादियों की हैं, और मिथ्या हैं। एक ही बात सच है, कि हम उसकी कृपादृष्टि पा लें। हम नाम की पवड़ी चढ़ते रहें, लाख मर्तबा वह करते रहें, लाख लोगों को साथ लेकर करते रहें, लाख लोग, लाख मर्तबा करते रहें।

३३

"आखणि जोरु चुपै नह जोरु।
जोरु न मंगणि देणि न जोरु।
जोरु न जीवणि मरणि नह जोरु।
जोरु न राजि मालि मनि सोरु।
जोरु न सुरती गिआनि वीचारि।
जोरु न जुगती छूटै संसारु।
जिसु हथि जोरु करि वेखै सोइ।
नानक उतमु नीचु न कोइ" ॥ ३३

अब भगवान् को समर्पण करना है। इसलिए कहते हैं—हमारा, व्यक्ति का, अहंकार या जोर कहीं नहीं चलेगा; भगवान् के वर्णन में भी नहीं चलेगा। चुप रहने में भी जोर नहीं चलेगा। अंतःकरण में चुप्पी चाहिए। माँगने में, देने में, जीने में, मरने में, कहीं जोर नहीं चलेगा। राज्य और धन-प्राप्ति में भी जोर नहीं चलेगा। यद्यपि मन में उनकी कामना का 'सोरु' (उत्साह) बहुत है। 'सोरु' जैसे एक छोटे-से शब्द में टीका की है। ज्ञान में, विचार में, और 'सुरती' में यानी स्मृति में या चित्त की तन्मयता में, हमारा जोर नहीं चलेगा। आखिर संसार से छूटने की साधना में भी जोर नहीं चलेगा। सामान्य बोलना, माँगना, देना, जीना, मरना, राज्य-प्राप्ति, आदि कहकर, आखिर साधना में और मुक्ति में भी,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हमारा जोर नहीं चलेगा, यह कहा है। जिसके हाथ में जोर है, वह भगवान् ही सब कुछ करता है और वही निरीक्षण करता है, कि अपने बच्चे कैसे काम करते हैं। नानक कहते हैं, कि इसलिए हमें समझना चाहिए, कि दुनिया में कोई उत्तम नहीं है, और कोई नीच नहीं है। भगवत्लीला चल रही है। पानी की एक लहर ऊँची चली जाती है, दूसरी लहर उतनी ऊँची नहीं जाती। परन्तु सब पानी की ही लहरें हैं, सब पानी ही पानी है।....दूसरी पौड़ी में कहा है कि **'हुकमी उतमु नीचु'** यानी उसके हुक्म से उत्तम और नीच होते हैं। यहाँ कहा है कि अपने तईं उत्तम-नीच कोई नहीं है। भगवान् का ही जोर चलता है।

३४

अब 'जपुजी' समाप्ति पर है। अन्त में साधक की प्रगति के मार्ग बताये हैं। वह एक के बाद एक सीढ़ी आगे कैसे बढ़ता है, यह बताया है, जो मौलिक है। अभी तक के विवेचन में भी बहुत मौलिकता है। सगुण-निर्गुण का विवेचन, योगसाधन, गुणविकास, नाम-जप वगैरह सबका समन्वय करने में, नानकजी की कुशलता दीखती है। परन्तु आखिर की पौड़ी में उनकी साधना की स्वतन्त्र कल्पना दीखती है। दूसरे शास्त्रों के साथ उसकी तुलना हो सकती है। नानक ने अपने अनुभव से साधकों को एक स्वतन्त्र कृति दी है।

"राती रुती थिती वार।
पवण पाणी अगनी पाताल।
तिसु विचि धरती थापि रखी धरमसाल।
तिसु विचि जीअ जुगति के रंग।
तिन के नाम अनेक अनंत।
करमी करमी होइ वीचारु।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सचा आपि सचा दरबारु।
तिथै सोहनि पंच परवाणु।
नदरी करमि पवै नीसाणु।
कच पकाई ओथै पाइ।
नानक गइआ जापै जाइ" ॥ ३४

यहाँ साधक की पंच भूमिकाओं का वर्णन है, जिसे 'खंड' नाम दिया है। प्रथम भूमिका को 'धरम खंड' कहा है।

'राती' यानी रात और दिन दोनों, 'रुती' यानी वसंतादि ऋतुएँ, 'थिती' यानी प्रतिपदा, द्वितीया आदि तिथियाँ, 'वार' यानी सोमवार, मंगलवार आदि सात वार—इस तरह एक ओर काल-पुरुष काम कर रहा है, और दूसरी ओर '**पवण पाणी अगनी पाताल**' है। ऊपरवाला पाताल 'आसमान' कहलाता है, और नीचे-वाला आसमान 'पाताल' कहलाता है। इस तरह दूसरी ओर पृथ्वी छोड़कर चार भूत बताये हैं। यानी सारा स्थलस्वरूप विश्व काम करता है। काल और स्थल के बीच भगवान् ने धरती की स्थापना, उसे 'धर्मशाला' कहकर, की है। धर्मशाला यानी अति-थियों के लिए मकान नहीं, बल्कि धर्माचरण करने का स्थान। भगवान् ने धरती को काल और स्थल के बीच रखा है। उस पर इधर से काल का असर होता है, उधर से स्थल का। हम सबके लिए धर्माचरण के तौर पर पृथ्वी की स्थापना की गयी है। तो, देश-काल का विचार करके, हमें धर्माचरण करना चाहिए, यह सुझाना चाहते हैं। अनेक लोकों के साथ अनंत आसमान एक ओर और अनंतकाल दूसरी ओर। दिक् और काल दोनों के बीच, धर्माचरण के लिए पृथ्वी की स्थापना की गयी है। यानी हमें यहाँ धर्माचरण के लिए ही जन्म मिला है। अनंत काल और अनंत स्थल के सामने, पृथ्वी एक छोटी-सी चीज है। उस पर हम पैदा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हुए हैं, तो धर्माचरण करके लीन हो जायँ। विविध स्वभावों और प्रकारों के जीवों की, क्षेत्र के बीच, क्षेत्रज्ञ के तौर पर, स्थापना की है। उनके नाम अनेक और अनंत हैं।

'करमी करमी'—'करम' शब्द संस्कृत है ऐसा मानकर, उसका अर्थ यह होगा, कि जीव और मनुष्य के कर्म देखकर उत्तम विचार होगा, हर एक के कर्म की परख होगी। वहाँ भगवान् बैठे हैं जो स्वयं सच्चे हैं, उनका दरबार सच्चा है। वहाँ जो भी पेश किये जायेंगे, उनकी ठीक जाँच होगी। वहाँ पर जो न्याय होगा, पंचों की राय से होगा। वे प्रामाणिक पंच भगवान् के दरबार में सुशोभित हैं, जो हमारे कर्म के साक्षी हैं। वे पंचपुरुष हमारे शरीर में पड़े हैं। पंच इन्द्रियों से काम होता है, इसलिए वे ही इन्द्रियाँ पंचों के रूप में भगवान् के दरबार में आयेंगी और वहाँ हमारे कर्म का हिसाब होगा। जिस पर भगवान् की कृपा-दृष्टि होगी वह पास हुआ, ऐसा सिक्का ('नीसाणु'), उसे मिलेगा। वहाँ पर कच्चा और पक्का, यह सारा देखा जायगा। किसका काम ठीक है और किसका बेठीक, इसकी परख दुनिया में नहीं होती, क्योंकि कर्म के पीछे जो हेतु होता है, उसे दुनिया नहीं जानती। दुनिया कर्म के एक ही अंग को देखती है। कर्म का स्वरूप यहाँ पूरा नहीं दीख पड़ता। इसलिए कर्म का मूल्य यहाँ नहीं आँका जा सकता। कर्म का हेतु, उद्देश्य न जानते हुए, केवल फल को देखने से, गलतफहमी होती है। लेकिन वहाँ पर कर्म का हेतु, स्वरूप और पर्यवसान, यह सब देखकर, मनुष्य के कर्म के बारे में फैसला होगा। हमारी कच्चाई और पक्काई का फैसला, वहाँ जाने पर ही होगा। दुनिया तो गलत मनुष्य का भी गौरव करती है, क्योंकि वह ऊपर-ऊपर से ही देखती है। नानक कहते हैं कि वहाँ जाने पर ही जाना जा सकता है, उसके पहले किसी का फैसला नहीं हो सकता। ईसामसीह ने ठीक कहा है कि 'जज् नॉट्, दॅट् यी बी नॉट् जज्ड्'। तुम प्रेम और

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करुणा रखो। परन्तु कौन किस प्रकार का है, इसका न्याय मत करो। अन्दर से तो परमेश्वर ही है। बाहर से जो कर्म चलता है, उसकी परख तुम नहीं कर सकते। उसकी परख वहीं होगी। ●

३५

"धरम खंड का एहो धरमु।
गिआन खंड का आखहु करमु।
केते पवण पाणी वैसतर केते कान महेस।
केते बरमे घाड़ति घड़ीअहि रूप रंग के वेस।
केतीआ करम भूमी मेर केते केते धू उपदेस।
केते इंद चंद सूर केते केते मंडल देस।
केते सिध बुध नाथ केते केते देवी वेस।
केते देव दानव मुनि केते केते रतन समुंद।
केतीआ खाणी केतीआ बाणी केते पात नरिंद।
केतीआ सुरती सेवक केते नानक अंतु न अंतु" ॥३५

यह है धरम खंड का स्वरूप, जहाँ धर्माचरण होता है। धर्म-भूमिका के बाद, ज्ञान की भूमिका आती है। साधक को प्रथम, नीति-अनीति का खयाल करके, अपना आचरण शुद्ध करना चाहिए। आधुनिक परिभाषा में, यह नैतिक भूमिका है। फिर ज्ञान की भूमिका आती है।

नैसिक विवेक, सत्य-असत्य की परख, सत्याचरण का आग्रह, असत्य का निषेध, यह साधक की प्रथम भूमिका, यानी धरमखंड है। उसके बाद जब तटस्थबुद्धि की प्रभा खुलती है, तब ज्ञान-खंड का क्रम शुरू होता है। ज्ञानभूमि में तटस्थ, साक्षी-रूप, होकर दर्शन करना है। अपनी दुनिया में एक ही पवन, पानी, और अग्नि, काम करते हैं। लेकिन विश्व में अनेक पवन आदि काम करते हैं। वहाँ कितने ही कृष्ण ('कान') हैं, महेश हैं,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

का था, जिसमें सद्-असद् का विवेक था। फिर ज्ञान खंड और उसके बाद सरमखंड। 'सरम' का एक अर्थ विनय भी हो सकता है। कोई उसका अर्थ संस्कृत के अनुसार 'श्रमखंड' करते हैं, तो कोई फारसी के अनुसार 'विनयखंड' करते हैं। मेरे ध्यान में एक बात आ गयी है कि इस प्रकार से जहाँ निश्चय नहीं होता है, वहाँ नानक हमें संशय में, अनिश्चय में नहीं डालना चाहते हैं, बल्कि दोनों अर्थों को एक करके अर्थ करना चाहते हैं। उभय-भाषिक शब्दों का समन्वययुक्त प्रयोग करनेवाले, नानक अभिनव आचार्य हैं। इसलिए यहाँ पर 'सरमखंड' का मतलब, विनययुक्त उद्योग, नम्रता, या कुल साधना के बचाव के लिए नम्रता, इस तरह मैं दोहरा अर्थ करता हूँ, जो दो सूत्रों ('सोर्सेस्') से आया है। साधना का स्वरूप है, विनयशील उद्योग। विनयप्रधान साधना की 'बाणी' यानी 'कौल' ('मोटो') क्या होगा ? इसमें जीवन का सुन्दर रूप बनेगा। इसके पहले के ज्ञानखंड में भी 'घाड़ति' घड़ने की बात थी। परन्तु वहाँ मनुष्य अपने जीवन की घड़त नहीं बना रहा था, बल्कि ब्रह्मदेव के जरिये सृष्टि में जो 'घड़त' बन रही है, उसका साक्षी रूप में दर्शन कर रहा था। यहाँ जीवन की कारीगरी हमें अपने में ही करनी है। धर्मखंड में मिट्टी तैयार की गयी। ज्ञानखंड में उसमें पानी डाला गया। अब सरमखंड में मूर्ति बनाने का, उसे अनुपम सुन्दर रूप देने का बड़ा काम करना है।

'ता कीआ गला कथीआ ना जाहि'—उसकी महिमा का वर्णन नहीं किया जा सकता है, और जो करेगा, वह पछतायेगा। क्योंकि अनुभव प्रथम सीमित होता है, फिर नया अनुभव आता है, और आगे का स्वरूप खुल जाता है। इस तरह धीरे-धीरे जीवन की मूर्ति बन रही है, सुन्दर शक्ल बन रही है। वर्णन करने की किसीको स्फूर्ति होती है, लेकिन वह वर्णन करने बैठेगा, तो बाद में पश्चात्ताप करेगा। [पहले वचन आया है—**'मंने की**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गति कही न जाइ। जे को कहै पिछै पछुताइ'—मनन की गति जो कहेगा, वह पीछे पछतायेगा। शास्त्र में इसे 'निस्तार' कहते हैं। वही शब्दरचना दुबारा, तिबारा आती है, तो मनुष्य पाठ करते समय कहाँ का कहाँ चला जाता है! वेद के 'पवमान सूक्तों' में छह-सात सौ मंत्र हैं। उसमें बीसों दफा 'निस्तार' आया है। इसलिए वह कंठ करके ठीक बोलना बड़ा सावधानी का विषय है। पवमान से विष्णु भगवान् को अभिषेक किया जाता है। कुरानशरीफ में भी बहुत निस्तार है।]

'सूरति' यानी पूर्ण तन्मयता, एकाग्रता। गुजरात के कवि प्रेमळदास का वचन है : **'जेनि सुरता सामळिया साथ'** —जिसकी ईश्वर के साथ तन्मयता है। 'मति' यानी मनन-शक्ति। ये मन और बुद्धि के विषय हैं। तन्मयता और मनन-शक्ति सरमखंड की भूमिका में बनती है, घड़ी जाती है। वहाँ सुरों की, और सिद्धों की, 'सुधि' यानी सूझ, प्रतिभा, बनती है। जिनमें ज्ञान परिपूर्ण हो गया वे 'सिद्ध'। और 'सुर' यानी आधिकारिक सिद्ध, जिन सिद्धों को दुनिया के कल्याण का अधिकार मिला है। वास्तव में ज्ञान-प्राप्ति के बाद देहमुक्ति होती है, परन्तु 'अधिकार' है, इसलिए देह रहती है। इस तरह दोनों प्रकार के ज्ञानियों की प्रतिभा, वहाँ घड़ी जाती है।

३७

"करम खंड की बाणी जोरु।
तिथै होरु न कोई होरु।
तिथै जोध महा बल सूर।
तिन महि रामु रहिआ भरपूर।
तिथै सीतो सीता महिमा माहि।
ताके रूप न कथने जाहि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ना ओहि मरहि न ठागे जाहि।
जिन कै रामु वसै मन माहि।
तिथै भगत वसहि के लोअ।
करहि अनंदु सचा मनि सोइ॥

सच खंडि वसै निरंकारु।
करि करि वेखै नदरि निहाल।
तिथै खंड मंडल वरभंड।
जे को कथै त अंत न अंत।
तिथै लोअ लोअ आकार।
जिव जिव हुकमु तिवै तिव कार।
वेखै विगसै करि वीचारु।
नानक कथना करड़ा सारु" ॥ ३७

प्रथम भूमिका, धर्मविचार की, द्वितीय तत्त्वज्ञान की, तृतीय नम्रतायुक्त साधना की, हमने देख ली। अब चतुर्थ और पंचम भूमिका एक ही पौड़ी में डाली है। उन्हें अलग-अलग डाल सकते थे, लेकिन एक म डाला है, तो उसका मतलब यह है कि दोनों मिलकर एक ही भूमिका मानी गयी है, यद्यपि वे दो स्पष्ट, अलग-अलग हैं। यहाँ पर 'करम' यानी परमेश्वर की कृपा ('ग्रेस')। साधना के बाद परमेश्वर की कृपा का खंड आता है। उसकी क्या 'बाणो', क्या कौल है? 'जोरु' यानी जोड़, परमेश्वर के साथ संगत। परमेश्वर की कृपा का स्वरूप यह है कि मनुष्य निरंतर परमेश्वर की संगति में रहता है। वहाँ और कोई नहीं रहता, जिसे हम 'और' यानी अपने से भिन्न, विजातीय, या परकीय, कह सकें। एक परमेश्वर, दूसरे हम यानी हमारी मण्डली, तीसरा कोई नहीं। यानी दुनिया का लोप है, अथवा दुनिया का ईश्वर में समावेश है। वहाँ हमारी बड़ी मंडली है। कुछ लोगों को मुक्ति

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

का यह दृश्य बड़ा प्रिय है। जैसे, इसलाम और अनेक वैष्णव उपासक इसे पसन्द करते हैं कि भगवान् की उपस्थिति में हम सब बैठे हैं, भगवान् का और साथवालों का परस्पर संवाद चल रहा है। वहाँ पर महाबलवान् शूर योद्धा हैं, यानी ऐसे लोग, जो खूब साधना कर चुके हैं। उनके हृदय में राम बसे हुए हैं, उनमें राम भरपूर रम रहा है। 'जपुजी' में 'राम' शब्द यहाँ पर पहली बार आया है, लेकिन वह शब्द परमात्मस्वरूप में आया है। वैसे दूसरे भी देवताओं के नाम आये हैं, लेकिन 'राम' शब्द उस प्रकार का नहीं है। वह परमात्मा के लिए ही आया है। 'राम' की व्युत्पत्ति है, अन्दर रममाण होनेवाला।

'तिथै सीतो'—यह बड़ा विकट वाक्य है। वहाँ सी हुई शोभा है, यानी बिलकुल अनुस्यूत हुई शोभा है। ईश्वर से उसकी शोभा अलग नहीं हो सकती। सूर्य से उसकी प्रभा, शिव से शक्ति, रूप से छाया, ब्रह्म से प्रकृति, अलग नहीं हो सकती। यहाँ 'सीता' शब्द पर श्लेष है। रामजी की, परमेश्वर की, महिमा सारी सृष्टि में फैली हुई है। उसमें उसकी शोभा, सीता जुड़ी हुई है। परमेश्वर कहाँ रहते हैं? **'स्वे महिम्नि यदि वा न महिम्नि इति।'** वे अपनी महिमा में रहते हैं, और महिमा में नहीं भी रहते। **'एतावान् अस्य महिमा। अतो ज्यायांश्च पूरुषः।'** यह सब उनकी महिमा है। और वह परम पुरुष उससे भी महान् है। उसकी जो महिमा फैली हुई है, उसके एक अंशमात्र का ही हम वर्णन कर सकते हैं। उससे हम उसकी महिमा बयान नहीं करते हैं, बल्कि नीचा ही वर्णन करते हैं। वस्तु और वस्तु की महिमा, द्रव्य और द्रव्य के गुण, अलग नहीं कर सकते हैं। बर्फी और उसकी मिठास, अलग नहीं कर सकते हैं। सीता का रूप अवर्णनीय है, ऐसा वाल्मीकि ने कहा है। परमेश्वर की शोभा का कोई वर्णन नहीं कर सकते। जिनके मन में राम बस गये, उन्होंने वहाँ स्थिर निवास कर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लिया। वे कभी मरेंगे नहीं, **'अमर भये।'** दुनिया में ऐसी कोई शक्ति नहीं, जो ऐसे पुरुष को ठग सके। वहाँ पर कितने ही लोकों के भक्त रहते हैं। लोक यानी चंद्रलोक, पृथ्वीलोक, इत्यादि। अनेक दुनियाओं में से, भक्ति करनेवालों की बहुत बड़ी जमात वहाँ इकट्ठा होती है। उनका और कोई कार्यक्रम नहीं है, सिवा इसके कि आनंद करना। **'न वै देवाः अश्नन्ति न पिबन्ति। एतदेवं अमृतं दृष्ट्वा तृप्यन्ति।'** देव खाते नहीं, पीते नहीं, अमृत को देखकर ही, तृप्त हो जाते हैं। ज्ञान पहले ही हो चुका, और साधना में क्रिया हो चुकी। ज्ञान और क्रिया को पार करके, हम चौथी भूमिका में पहुचे हैं, इसलिए वहाँ आनन्द ही आनन्द है। वहाँ अनेक धर्मों के, और पंथों के, उपासक होंगे। वे कहीं से भी आये हों, आनद ही करते हैं, क्योंकि वही एकमात्र सत्यस्वरूप परमेश्वर उनके मन में है। यही उनके जीवन का स्वरूप है।

'सच खंडि वसै'—अब पाँचवाँ खंड शुरू होता है। व्याकरण के अनुसार 'निरहंकार' से 'निरंकार' बन सकता है, 'निराकार' से 'निरंकार' नहीं बन सकता। लेकिन अपने शब्दों को संस्कृत रूप देने की, संतों की वृत्ति थी। यहाँ निरंकार से 'निराकार' समझना है। सत्यखंड में निराकार या निरहंकार भगवान् रहते हैं। वे दुनिया को रच करके, दुनिया की तरफ देख रहे हैं, और अपनी कृपादृष्टि से आशीर्वाद दे रहे हैं। चौथी भूमिका में भगवान् और भक्त, दो ही थे, तीसरा कोई नहीं था। लेकिन पांचवीं भूमिका में, एक भगवान् ही है, दूसरा कोई नहीं है। वहाँ अनेक खंड, देश, अनेक ब्रह्मांड, पड़े हैं, जिनको कोई गिनने बैठे तो उसका अंत नहीं आयेगा, क्योंकि अंत है ही नहीं। परमेश्वर है, हम अलग से हैं नहीं। सारी सृष्टि परमात्मा की महिमा-रूप है। वहाँ अनेक लोकों के आकार बन रहे हैं। जैसे उसका हुक्म होता है, वैसा काम बनता है। भगवान् देखता है ('वेखै'), और विचार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करके खुश होता है ('विगसै')। देखने में विचार की जरूरत नहीं है, 'विगसै' में विचार की जरूरत हैं। इसलिए वह देखता है, और विचार कर-करके हँसता है। नानक कहते हैं, कि वहाँ के स्वरूप का वर्णन करना लोहे ('सारु') के जैसा 'करड़ा' यानी कठिन है, इसलिए वर्णन न करना ही ठीक है।

यहाँ पर एक ही पौड़ी में परमेश्वर की कृपा-प्राप्ति की भूमिका, करमखंड और उसके बाद सत्यखंड का बयान किया है। उससे यह भाव सूचित होता है, कि उसमें एक ही खंड है, और दूसरा केवल परमेश्वर का वर्णन करनेवाला स्थान है। यानी वह भूमिका ऐसी नहीं है, जहाँ साधक पहुँचता है। बल्कि वहाँ परमेश्वर ही बैठा है। साधक की भूमिका यह है कि भगवान् के सामने सब भक्तजन बैठे हैं और उनके मन में सत्यस्वरूप भगवान् निरंतर हैं। राम हैं और सीता हैं, तीसरा कोई नहीं है। वे भक्त भगवान् से जुड़े हुए हैं।

अब सवाल उठता है कि क्या यही भूमिका अंतिम है? या तो भक्त ईश्वर के साथ एकरूप हो गया, उसमें लीन हो गया, इसलिए हम ईश्वर का वर्णन करते हैं, तो वह भक्त की ही अंतिम भूमिका का वर्णन हो जाता है। मेरी रुचि, ईश्वर के अंदर लीन होने में है। लेकिन मेरी रुचि के अनुसार अर्थ नहीं करना है। इसलिए संभव है कि यहाँ भक्त की पाँचवीं भूमिका न होकर परमेश्वर का ही वर्णन हो। सत्यखंड में 'निरंकार' प्रभु ही रहता है। वह करता रहता है और देखता रहता है। भक्त अगर भगवान् के साथ एकरूप बना, तो वह उसमें समा गया, इसलिए आखिर, ईश्वर का ही वर्णन रह जाता है। 'जोर' का अर्थ भगवान् में बिलकुल डूब जाना भी हो सकता है। या भक्त भगवान् के साथ, उसकी संगति में है, यह भी हो सकता है। इस तरह पाँचवीं भूमिका में या तो परमेश्वर का स्वतंत्र वर्णन है, या तो परमेश्वर में लीन हुए भक्त का भी वर्णन है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

....इन दो भूमिकाओं की मैंने कइयों के साथ चर्चा की है। मैंने कई मित्र ऐसे देखे हैं, जिनको ईश्वर के अन्दर डूब जाना पसन्द नहीं है, वह उन्हें भाता नहीं। वे चाहते हैं कि ईश्वर रहे, और उसके साथ हम रहें। इस तरह की मानसिक प्रीति वे चाहते हैं। आखिर मनुष्य के मन की जो प्रीति है, उससे भिन्न फल ईश्वर उसे क्यों देगा? इसीको 'सगुण-मुक्ति' कहते हैं। कुछ लोग निर्गुण-मुक्ति की कल्पना, सहन ही नहीं कर पाते हैं। वह सहन न होती हो, तो फिर भक्त की वह पाँचवीं भूमिका है ही नहीं। फिर वह ईश्वर का ही वर्णन रह जाता है।

३८

"जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु।
अहरणि मति वेदु हथीआरु।
भउ खला अगनि तपताउ।
भांडा भाउ अंम्रितु तितु ढालि।
घड़ीऐ सबदु सची टकसाल।
जिन कउ नदरि करमु तिन कार।
नानक नदरी नदरि निहाल" ॥ ३८

साधक का संयम भट्टी ('जतु') है, और धीरज है सुनार, बनानेवाला, स्वरूप देनेवाला। वह जिस पर गहना ठोंक-ठोंककर बनाता है, वह 'अहरन' है बुद्धि ('मति')। ठोंकने का हथियार है 'वेद', यानी अनुभव ज्ञान। 'भउ' यानी भय, धौंकनी ('खला') है। 'जपुजी' के आरम्भ में 'निरभउ निरवैरु' कहा है। लेकिन मनुष्य को परमेश्वर का भय होना चाहिए, क्योंकि परमेश्वर का भय न रहा, तो मनुष्य अनेक पाप करेगा। तपश्चर्या की अग्नि प्रज्वलित हो रही है और जिस ढाँचे में, 'मूषा' में ढालना है, वह है प्रेम। प्रेम 'भांडा' है, जिसमें रस ढाला जायगा। उसके अन्दर भगवान्

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

का नामरूपी अमृत ढालना चाहिए। इस तरह हमारी सच्ची यानी सत्यमय टकसाल चले, तो उसमें से 'शब्द' बनेगा। संयम, धैर्य, बुद्धि, अनुभव का ज्ञान, ईश्वरभय, तप, प्रेमभक्ति और भगवन्नाम,—ये आठ जो सत्य के अन्तर्गत हैं, साधन हैं शब्द घड़ने के। ये आठ साधन नानक का आखिरी शब्द है।

इस एक पौड़ी में साधक के लिए सूचना बतायी है, कि इन आठ साधनों से जो 'शब्द' बनेगा, वह शब्द हमें बचायेगा। शब्द बनाने का यह काम कौन करेगा? जिस पर परमेश्वर की कृपा-दृष्टि होगी, वही करेगा। यानी परमेश्वर की कृपा-दृष्टि आवश्यक है, उसके बिना यह अष्टविध कार्यक्रम नहीं बनेगा। नानक कहते हैं, कि परमेश्वर की अनवरत कृपा-दृष्टि से कितने ही भक्तजन हैं, जो निहाल हो गये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सलोकु

"पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु।
दिवसु राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु।
चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि।
करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि।
जिनी नामु धिआइआगए मसकति घालि।
नानक ते मुख उजलेकेती छुटीनालि"।

यह उपसंहार का श्लोक है। 'धरति माता' श्रेष्ठ माता है। 'पाणी' पिता है। और 'पवण' गुरु है।....मैं जो कहता हूँ, कि हवा पानी की तरह, जमीन की मालिकी नहीं हो सकती, वे ही तीन यहाँ इकट्ठा किये हैं।....मनुष्य को माता, पिता और गुरु, तीनों से तालीम मिलती है। **'यथा मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् ब्रूयात्।'** उपनिषदों में कहा है कि जिसे उत्तम माता, पिता और गुरु मिले हैं, उसे ज्ञान होता है। धारण करनेवाली माता धरती है। हमने इसके पहले देखा है कि स्थल-काल के बीच, धर्माचरण के लिए, धरती की स्थापना की है। एक ओर कालप्रवाह—**'राती रुती थिती वार'**—काम कर रहा है और दूसरी ओर **'पवण पाणी अगनी पाताल'**—सृष्टि काम कर रही है। यहाँ पवन, पानी और धरती, तीनों को स्थलरूप माना है। दिवस और रात्रि ये दो, 'दाई' और 'दाइआ', जो काल-प्रतिनिधि हैं, बच्चे की हिफाजत के लिए रखे हैं। इन दाई-दाइआ की संगति में कुल जगत् का खेल चल रहा है। किसीके अच्छे काम ('चंगिआईआ') और बुरे काम ('बुरिआईआ') क्या हैं, यह सब धर्मराज के दरबार में उसके सामने पढ़ा जाता है।

धर्म-भूमिका में जो आरम्भ किया था, वही यहाँ पर दुहराया जा रहा है, कि कच्चा और पक्का, वहीं मालूम होगा। आप

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh